जून 2023

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

कृष्ण भगवान ने व्यवहार में
'संशयात्मा विनश्यति' लिखा है।
जिस व्यक्ति को हर
कहीं पर शंका होती है,
वह व्यक्ति मरा हुआ ही है न!
सभी पर शंका होती है,
वह मनुष्य जीएगा ही कैसे?

पूज्यश्री का यू.के. जर्मनी सत्संग प्रवास : ता. 29 मार्च से 24 अप्रैल 2023

केंट

लेस्टर

यू.के. शिविर पॉटिन्स

हेंगो

बिलिंगन - जर्मनी

मूर्ति विधि

वर्ष : 18 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 212
जून 2023
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2023
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दादाश्री देते हैं 'शंका' का समाधान

संपादकीय

अनादिकाल से मनुष्य की प्रकृति स्वाभाविक रूप से सांसारिकभावमय ही बंधी हुई होती है। जब खुद को 'ज्ञानी पुरुष' से आत्मज्ञान प्राप्त होता है तब खुद अध्यात्म में प्रवेश करता है परंतु पूर्वजन्म में बंधी हुई सांसारिक स्वभावमय प्रकृति संयोगों के दबाव में, उदयमान हुए बिना नहीं रहती। मोक्षमार्ग की प्राप्ति के बाद (उसमें) बाधक दोषों का विस्तारपूर्वक विवरण हों तो मोक्षमार्ग का सच्चा अभिलाषी साधक खुद उस मार्ग पर प्रयाण करके मार्ग के मर्म को पूरी तरह से प्राप्त कर सकता है। पिछले अंक में, शंका नामक बाधक दोष का स्वरूप और उसके जोखिमों का विश्लेषण मिला था और प्रस्तुत अंक में, दादाश्री, शंका के दोष से संघर्ष कर रहे मोक्षार्थी को छूटने के लिए समझ के विविध स्पष्टीकरण देते हैं।

श्री कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है कि 'संशयात्मा विनश्यति'। निश्चय में तो पूरे जगत् को संशय है, परंतु व्यवहार में जो संशय वाला है, वह जीते जी ही मर जाता है। कर्म राजा का नियम है कि जिसे शंका होती है, उसके वहाँ वे पधारते हैं! और जो उनकी नहीं सुनते, उनके वहाँ तो वे खड़े भी नहीं रहते। जिस कार्य को करते समय भीतर ज़रा सी भी शंका न हो तो उसका (वह) काम अवश्य होगा ही।

शंका में दो नुकसान है, एक तो खुद को प्रत्यक्ष दु:ख भुगतना पड़ता है और दूसरा, सामने वाले को गुनहगार देखते हैं। शंका, वह ऐसा बीज है कि जिसमें से सत्रह सौ वनस्पतियाँ उगकर पूरा संसार रूपी जंगल खड़ा कर देती है। व्यक्तियों से संबंधित शंका में उसकी ज़ोखिमदारी अनेक गुना बढ़ जाती है। शंका होना, वे जो सभी अभिप्राय पड़े हुए हैं उनका परिणाम है। शंका होते ही सामने वाले का मन हमसे अलग हो जाता है! चारित्र संबंधी शंका रखने वाला मोक्ष खो बैठता है। अत: चाहे कैसी भी शंका हो उत्पन्न होने से पहले ही जाग्रत रहकर उसे ज्ञान से उखाड़कर फेंक देना चाहिए। पूर्व के बीज अनुसार यदि शंका हो जाए तब फाइल-1 से यथार्थ प्रतिक्रमण करवाने हैं, ताकि शंका कम हो जाए।

ज्ञानी पुरुष के श्रीमुख से प्रकट हुआ अक्रम विज्ञान तो अनेक जन्मों के अनुभवों के पृथक्करणों का निचोड़ (सार) है। शंका से बचने के लिए ज्ञानी पुरुष पाँच आज्ञा की वैज्ञानिक समझ देते हैं। उसमें 'व्यवस्थित' का ज्ञान समझ में आ जाए तो वहाँ शंका उत्पन्न नहीं होगी। शंका के सामने जागृति ही बढ़ाने की ज़रूरत है। दादाश्री करुणा से कहते हैं कि 'इस शंका शब्द को तो मैं पूरी दुनिया से निकाल देना चाहता हूँ। 'वर्ल्ड' में इसके जैसा कोई दु:ख नहीं है। नि:शंक जगत् मैंने देखा है, यह नि:शंक वाली दिशा आपको बता देता हूँ। अत: इस जगत् के लोगों की शंका निर्मूलनपन को प्राप्त करेगी'। अब, ज्ञानी के पीछे-पीछे चलकर हम भी ऐसा विज्ञान जानें, जिससे इस शंकारूपी पज़ल का हल लाकर मोक्षमार्ग में प्रगति कर सकें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

दादाश्री देते हैं 'शंका' का समाधान

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

संशयात्मा विनश्यति

प्रश्नकर्ता : गीता में कहा है कि 'संशयात्मा विनश्यति'। तो उसमें आत्मा संबंधी संशय होता है या दूसरा कोई संशय होता है?

दादाश्री : संशय सभी को होता है। उसमें संशय रहित कोई मनुष्य नहीं होता। उसे तो इस जगत् में किसी पर भी विश्वास ही नहीं आता, संशय ही होता रहता है और संशय से वह मर जाता है। मरा हुआ ही है न!

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में संशय या निश्चय में संशय? कौन सा संशय?

दादाश्री : निश्चय में संशय तो पूरे जगत् को है ही। वह तो नियम से है। कृष्ण भगवान ने व्यवहार में 'संशयात्मा विनश्यति' लिखा है। पूरा जगत् आत्मा के संशय में तो है ही, उन्हें मरना नहीं पड़ता। लेकिन जो व्यवहार में संशय वाला है वह मर जाएगा, वह मरा हुआ ही है। उस व्यक्ति को किसी पर विश्वास नहीं आता, संशय होता रहता है। खुद उधार देना चाहता है और कर्ज़दारों पर संशय होता रहता है, तो वह व्यक्ति मृत समान ही है। बेटियाँ कॉलेज में जाती हैं, तो 'फादर' के मन में होता है कि 'उम्र हो गई है, अब ये लड़कियाँ क्या कर रही होंगी? वे क्या करती हैं? कैसे मित्र रखती हैं?' यों संशय ही करता रहता है। वह मृत समान ही है न!

संशय तो काम का ही नहीं है। संशय तो, ये जो चाकू लेकर मारने जाते होंगे, उन्हें ज़रा सा भी संशय नहीं होता, तभी तो वे मारने जाते हैं! और मरने वाले को भी ज़रा सा भी संशय नहीं होता, तभी मरता है। लेकिन वह एक ही बार मरता है और यह संशयात्मा, वह तो हमेशा के लिए मरा हुआ ही है।

जिस व्यक्ति को हर कहीं पर शंका होती है, पत्नी पर शंका होती है, बाप पर शंका होती है, माँ पर शंका होती है, भाई पर शंका होती है, वह व्यक्ति मरा हुआ ही है न! सभी पर शंका होती है, वह मनुष्य जीएगा ही कैसे?

सुंदर संचालन, वहाँ शंका कैसी?

रात को कभी आपने हांडवा (एक गुजराती व्यंजन) खाया है? और फिर वह हांडवा खाकर और थोड़ा दूध पीकर सो जाते हो या नहीं सो जाते? तो फिर अंदर जाँच नहीं की कि अंदर पाचक रस डले या पित्त डला या नहीं डला, वह सब? बाइल कितना डला, कितने पाचकरस डले, वह सब जाँच नहीं किया?

प्रश्नकर्ता : वह सब तो हो ही जाता है न! वह 'ऑटोमेटिकली' होगा ही। उसके लिए जाँच करने की क्या ज़रूरत?

दादाश्री : तो क्या बाहर 'ऑटोमेटिकली' नहीं होता होगा? यह अंदर तो इतना बड़ा तंत्र अच्छी तरह से चलता है तो बाहर तो कुछ करना ही नहीं है। अंदर तो खून, यूरिन, संडास सबकुछ

अलग कर देता है, कितना सुंदर कर देता है! फिर, छोटे बच्चे की माँ हो तो उस तरफ दूध भी भेज देता है। कितनी तैयारी है सारी! और आप तो चैन से गहरी नींद सो जाते हो! और अंदर तो सब अच्छा चलता रहता है। कौन चलाता है यह? अंदर का कौन चलाता है? और उस पर शंका नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो बाहर की भी शंका नहीं करनी चाहिए। अंत:करण में जो कुछ हो रहा है वही बाहर होता है, तो किसलिए हाय-हाय करता है? बीच में हाथ किसलिए डालते हो फिर? यह परेशानी क्यों मोल लेते हो? बिना बात की परेशानी!

जहाँ शंका न हो, वहाँ काम पूर्ण होता है

जहाँ शंका हो वह काम ही शुरू मत करना। जहाँ हमें शंका हो न, वह काम करना ही नहीं चाहिए। या फिर वह काम हमें छोड़ देना चाहिए। जहाँ शंका उत्पन्न हो, ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए।

संघ यहाँ से अहमदाबाद जाने के लिए निकला, चलने लगा। अंदर कुछ लोग कहेंगे, 'अरे, शायद बरसात हो जाए तो फिर पहुँच पाएँगे या नहीं, इसके बजाय वापस लौट चलो न'! ऐसी शंका वाले हों तो क्या करना पड़ेगा? ऐसे दो-तीन लोग हों तो वहाँ से निकाल देने पड़ेंगे। वर्ना पूरी टोली बिगड़ जाएगी। अत: जब तक शंका होती रहे न, तब तक कुछ भी ठीक से नहीं हो सकता। उससे कोई भी काम नहीं हो सकता। बहुत प्रयत्न करे, बहुत पुरुषार्थ करने से अगर वह बदल जाए तो सुधर सकता है। बदल जाए तो अच्छा। सभी खुश होंगे न!

जिसमें शूरवीरता हो, वह अगर कभी फेंकना चाहे (शंका को) तो सबकुछ फेंककर चलता बनता है और वह जैसा चाहे वैसा काम कर सकता है। इसलिए शूरवीरता रखनी चाहिए कि 'मुझे कुछ भी नहीं होगा'। अपने को ज़हर खाना होगा तभी खाएँगे और अगर नहीं खाना हो तो कौन खिला सकता है?

'अभी गाड़ी टकरा जाएगी तो?' यदि ड्राइवर ऐसा कहे तो हमें कहना चाहिए, 'रहने दे, तेरी ड्राइविंग बंद कर। उतर जा। बहुत हो चुका'। यानी ऐसे व्यक्ति को छूने भी नहीं देना चाहिए। शंका वाले के साथ तो खड़े भी नहीं रहना चाहिए। अपना मन बिगड़ जाता है। शंका क्यों आनी चाहिए? साफ-साफ होना चाहिए। विचार तो कैसे भी आएँ लेकिन हम 'पुरुष' (आत्मा) हुए हैं न? 'पुरुष' नहीं हुआ तो मनुष्य मर जाएगा। पुरुष हो जाने के बाद कहीं पुरुषार्थ में शंका होती होगी? पुरुष होने के बाद फिर भय कैसा, स्वपुरुषार्थ और स्वपराक्रम उत्पन्न हुए हैं। फिर भय कैसा?

प्रश्नकर्ता : शूरवीरता रखनी पड़ती है या अपने आप रहती है?

दादाश्री : रखनी पड़ती है। हम यदि ऐसा नहीं सोचें कि 'गाड़ी का एक्सिडेन्ट होगा' तब भी यदि वह होना होगा तो छोड़ेगा क्या? और जो सोचता है, उसका? उसका भी होगा। लेकिन जो सोचे बगैर बैठता है, वह शूरवीर कहलाता है। उसे लगती भी कम है, बिल्कुल कम चोट लगती है और बच जाता है।

गाड़ी में बैठने के बाद ऐसी शंका होती है कि 'परसों ट्रेन टकरा गई थी, तो आज भी टकरा जाएगी तो क्या होगा?' ऐसी शंका क्यों नहीं होती? अत: जो काम करना है, उसमें शंका

मत रखना और अगर आपको शंका हो तो वह काम मत करना। 'आइदर दिस ऑर देट!' ऐसा तो (शंका करते रहना) कहीं होता होगा? जो ऐसी बातें करे उसे तो उठाकर कहना कि, 'घर जा, यहाँ पर नहीं'। शूरवीरता की बात होनी चाहिए।

हमें घर जाना हो और कोई एक व्यक्ति ऐसा कहता रहे, 'घर जाते हुए कहीं टक्कर हो जाएगी तो क्या होगा? या फिर एक्सिडेन्ट हो जाएगा तो क्या होगा?' तो सब के मन कैसे हो जाएँगे! ऐसी बातों को घुसने ही नहीं देना चाहिए। शंका तो होती होगी?

समुद्र किनारे घूम रहे हों और कोई कहे, 'अभी लहर आए और खींचकर ले जाए तो क्या होगा?' किसी ने बात की हो कि, 'ऐसे लहर आई और खींचकर ले गई'। तब हमें शंका होने लगे तो क्या होगा? यानी ये 'फूलिशनेस' (मूर्खता) की बातें हैं। 'फूल्स पेरेडाइज़!' (मूर्खों का स्वर्ग)

यानी जो काम करना हो उसमें शंका नहीं और शंका होने लगे तो करना मत। 'मुझसे यह काम हो पाएगा या नहीं होगा', ऐसी शंका हो तभी से काम नहीं हो पाता। शंका रहती है, वह तो बुद्धि का तूफान है।

और (वास्तव में) ऐसा कुछ भी होता नहीं है। जिसे शंका होती है न, उसे सभी झंझट खड़े होते हैं। कर्म राजा का नियम ऐसा है कि जिसे शंका होती है, उसके वहाँ वे जाते हैं! और जो ध्यान नहीं देते, उनके वहाँ तो वे खड़े भी नहीं रहते। इसलिए मन मज़बूत रखना चाहिए। जिस कार्य को करते हुए भीतर बिल्कुल भी शंका उत्पन्न नहीं होती, उसका वह काम अवश्य होता ही है।

कर्म के अधीन प्रकृति, वहाँ कैसी शंका?

प्रश्नकर्ता : बहुत लोग ऐसे होते हैं कि जिनके लिए अभिप्राय रहते हैं कि 'यह व्यक्ति अच्छा है, यह लंपट है, यह लुच्चा है, अरे यह तो लूटने ही आया है'।

दादाश्री : अभिप्राय बंधते हैं, वही बंधन है। हमारी जेब में से कल कोई रुपये निकाल ले गया हो और आज वह वापस यहाँ पर आए तो हमें शंका नहीं रहती कि वह चोर है। क्योंकि कल उसके कर्म का उदय वैसा था। आज उसका उदय कैसा होगा, वह कैसे कह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन प्राण और प्रकृति साथ में जाते हैं।

दादाश्री : उस प्राण और प्रकृति को नहीं देखना है। हमें उसके साथ लेना-देना नहीं है। वह कर्म के अधीन है बेचारा! वह उसके कर्म भोग रहा है, हम अपने कर्म को भोग रहे हैं। हमें सावधान रहना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : उस समय शायद उसके प्रति समभाव रहता है या नहीं भी रहता।

दादाश्री : हमारे कहे अनुसार आप करो तो आपका काम हो जाएगा (आपको समझ में आ जाएगा) कि 'यह सब कर्म के अधीन है'। और यदि आपका जाने वाला होगा, तभी जाएगा। इसलिए आपको घबराने का कोई कारण नहीं है।

अभिप्रायों का परिणाम 'शंका'

कोई हमसे दग़ा कर गया हो, वह हमें याद नहीं रखना है। अभी वर्तमान में वह क्या कर रहा है, वह देख लेना चाहिए, नहीं तो प्रेजुडिस (पूर्वग्रह) कहलाएगा। पिछला याद करने से बहुत नुकसान होता है।

प्रश्नकर्ता : पर ध्यान में तो रखना चाहिए न, वह?

दादाश्री : वह तो अपने आप हो ही जाता है। ध्यान में रखें तो 'प्रेजुडिस' होता है। 'प्रेजुडिस' से तो फिर संसार बिगड़ता है। हमें वीतराग भाव से रहना है। पिछला लक्ष्य में रहेगा ही, पर वह कुछ 'हेल्पिंग' चीज़ नहीं है। अपने कर्म के उदय वैसे थे इसलिए उसने अपने साथ वैसा वर्तन किया था। उदय अच्छे हैं तो ऊँचा वर्तन करेगा। इसलिए 'प्रेजुडिस' रखना मत। आपको कैसे पता चलेगा कि जो पहले ठगकर गया, वह आज नफा देने आया है या नहीं? और आपको उसके साथ व्यवहार करना हो तो करो और नहीं करना हो तो मत करना। परंतु 'प्रेजुडिस' मत रखना। और शायद कभी व्यवहार करने का समय आए तब तो बिल्कुल 'प्रेजुडिस' मत रखना।

प्रश्नकर्ता : अभिप्राय वीतरागता तोड़ते हैं?

दादाश्री : हाँ। हमें अभिप्राय नहीं होने चाहिए। अभिप्राय अनात्म विभाग के हैं, वह आपको 'समझना' है कि वे गलत हैं, नुकसानदायक है। खुद के दोष, खुद की भूलें, खुद के व्यू पोइन्ट्स से अभिप्राय बाँधते हैं। आपको अभिप्राय बाँधने का क्या 'राइट' (अधिकार) है? शंका होना, अर्थात् वे सब अभिप्राय पड़े हुए हैं उसका परिणाम है। किसी पर शंका नहीं होनी चाहिए।

शंका से मन अलग हो जाता है

उसे अभिप्राय सहित देखो, उसके दोष देखो, तो हमारे मन की छाया उसके मन पर पड़ती है। फिर वह आए तो भी हमें अच्छा नहीं लगता, उसका असर तुरन्त उसे भीतर होता है।

अभिप्राय बदलने के लिए क्या करना पड़ेगा? चोर हो तो मन में उसे 'साहूकार, साहूकार' कहना। 'ये अच्छे व्यक्ति हैं, शुद्धात्मा हैं, हमसे ही गलत अभिप्राय पड़ गया है।' इस तरह अंदर बदलते रहना।

सामने वाले के प्रति अपना अभिप्राय टूटा या हम उसके साथ खुश होकर बातें करें तो वे भी खुश हो जाते हैं।

किसी के लिए थोड़ा भी उल्टा या सीधा विचार आए कि तुरन्त उसे धो डालना चाहिए। वह विचार यदि, थोड़े ही समय रहा न, तो वह सामने वाले को पहुँच जाता है और फिर पनपता है। चार घंटे में, बारह घंटे में या दो दिनों बाद भी उसमें पनपता है। इसलिए स्पंदन का प्रवाह उस तरफ नहीं चले जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करके मिटा देना चाहिए तुरन्त ही। प्रतिक्रमण नहीं हो तो 'दादा' को याद करके या आपके इष्टदेव को याद करके संक्षिप्त में कह देना कि 'यह विचार आ रहा है वह ठीक नहीं है, वह मेरा नहीं है'।

शंका का अर्थ क्या है? जो खीर लोगों को खिलानी है उस खीर में एक सेर नमक डालना, वह शंका है। फिर क्या होगा? खीर फट जाएगी। इतनी ज़िम्मेदारी का तो लोगों को ध्यान नहीं है। हम तो शंका से बहुत दूर रहते हैं। हमें सभी प्रकार के विचार आते हैं। मन है तो विचार तो आएँगे, लेकिन शंका नहीं होती। मैं शंका की दृष्टि से किसी को देखूँ तो दूसरे दिन उसका मन मुझसे अलग ही पड़ जाएगा!

'प्रेजुडिस' परिणमित होता है शंका में

मनुष्य को शंका तो कभी भी नहीं करनी चाहिए। आँखों से देखा हो फिर भी शंका नहीं करनी चाहिए। शंका जैसा एक भी भूत नहीं है। शंका तो करना ही मत। शंका उत्पन्न हो तभी से जड़ से निकाल देनी चाहिए कि, 'दादा' ने

मना किया है। कोई कहे, 'यदि मैंने खुद देखा हो तो, कि कल यह व्यक्ति जेब में से रुपये ले गया था, और आज वापस आया है'। तब भी उस पर शंका नहीं करनी चाहिए। उस पर शंका करने के बजाय हमें अपनी 'सेफसाइड' कर लेनी चाहिए क्योंकि शंका करना 'प्रेजुडिस' कहलाता है। आज वह शायद ऐसा न भी हो। क्योंकि कितने ही लोग हमेशा के लिए चोर नहीं होते। कितने ही लोग संयोगवश चोर बन जाते हैं। बहुत ही तकलीफ आए तो चोरी कर लेते हैं, लेकिन वापस छः सालों तक नहीं दिखते। जेब में रख जाओ तब भी नहीं छूते, ऐसे संयोगवश चोर!

प्रश्नकर्ता : कई लोग शातिर होते हैं, वे चोरी करने का व्यापार ही लेकर बैठे होते हैं।

दादाश्री : वे चोर, वह अलग चीज़ है। यदि ऐसे चोर हों न, वहाँ तो हमें कोट दूर रख देना चाहिए। इसके बावजूद भी उसे चोर नहीं कहना चाहिए। क्योंकि हम थोड़े ही उसे मुँह पर 'चोर' कहते हैं? मन में ही कहते हैं न! मुँह पर कहेंगे तो पता चल जाएगा न! मन में कहने पर अपना जोखिम रहता है, मुँह पर कह दें तो हमें उसका जोखिम नहीं रहता। मुँह पर कह देंगे तो मार खाने का जोखिम है और मन में कहेंगे तो अपना जोखिम है। तब फिर क्या करना चाहिए हमें?

प्रश्नकर्ता : मन में भी नहीं रखना चाहिए और मार भी नहीं खानी चाहिए।

दादाश्री : हाँ, वर्ना मुँह पर कह दे वह व्यक्ति अच्छा है, सामने वाला दो गालियाँ देकर चला जाएगा। लेकिन यह जो मन में रहा, उसकी जोखिमदारी आती है। तो फिर उत्तम कौन सा? मन में भी नहीं रखना और मुँह पर भी नहीं कहना, वही उत्तम है। मन में रखना, उसे भगवान ने 'प्रेजुडिस' कहा है। कल कर्म का उदय था और उसने (जेब में से) लिया और आज शायद कर्म का उदय नहीं भी हो। क्योंकि, 'जगत् जीव हैं कर्माधीन'! ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : फिर भी लोग शंका रखने में बहुत पक्के हैं, नहीं? हम तो शंका रखते ही नहीं हैं और शंका पहले से ही बंद कर देते हैं, ताला ही लगा चुके हैं न! जो शंका निकाल देते हैं, वे 'ज्ञानी' कहलाते हैं। इस शंका के भूत से तो पूरा जगत् मर रहा है। कहेगा, 'यहाँ से होकर ऐसे गया था, कल यही अंदर आया था और ले गया था, वही अब इधर से गया वापस'। यों अंदर शंका उत्पन्न हुई।

प्रश्नकर्ता : यह आदमी गड़बड़ कर रहा है, उस पर ऐसी शंका हो तो क्या होगा?

दादाश्री : गड़बड़ कोई करता ही नहीं है। ऐसी शंका करने वाला ही गुनहगार है। शंका करने वाले को जेल में डाल देना चाहिए। बाकी, ऐसी शंका करने वाले मार खाते हैं। शंका हो तो मार खाएगा। खुद ही मार खाएगा। कुदरत ही उसे मारेगी और किसी को नहीं मारना पड़ेगा। जगत् किस प्रकार से क्षणभर भी चैन से रह सकता है? कितनी तरह के भूत और शंकाएँ कितनी तरह की! और शंका में दुःख कितना होता होगा!

ज्ञानी के नियम अलग

हमारे नियम आपके नियमों से अलग हैं। हम एक अभिप्राय वाले हैं, एक ही प्रकार का अभिप्राय, अभिप्राय नहीं बदलते हैं। अतः हम क्या करते हैं? मान लो कोट उतारकर घर में रखा है और उसमें दो सौ रुपए पड़े हैं। मेरा

ऐसा अभिप्राय था कि यह व्यक्ति कभी भी पैसे नहीं लेगा, चोरी नहीं करेगा। अब उस व्यक्ति को किसी ने जेब में हाथ डालते हुए देख लिया और मैंने नहीं देखा। फिर मुझे तो वापस बाहर जाना पड़ा। बाहर जब पैसों की ज़रूरत पड़ी तब जेब से पैसे नहीं निकले। बाहर जाकर वापस आने पर मैंने घर पर पूछा, 'किसी ने इसमें से पैसे लिए थे?' तब उन्होंने कहा कि, 'नहीं, हमने नहीं लिए। क्या हुआ है?' तब मैंने कहा, 'नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं। मैंने अंटी में डाल दिए थे, वे मुझे मिल गए'। फिर उन्हों ने कहा कि, 'वह भाई आपकी जेब में हाथ डाल रहे थे। क्या इसमें से कुछ कम हुआ है?' मैंने कहा, 'नहीं, मेरी अंटी में थे और वे मुझे मिल गए'। लेकिन मुझे यह पता चल गया कि किसने हाथ डाला था! अब उस भाई के लिए तो मैं ऐसा मानता था कि वे चोरी कर ही नहीं सकते। मेरा उनके प्रति ऐसा अभिप्राय था। अब एक बार अभिप्राय बनाया तो बस, उसे फिर बदलना नहीं है।

अरे! हमने खुद चोर को देखा हो, फिर कोई शंका नहीं रहे, और हमने दूर से देख लिया हो, फिर भी हम उसे चोर नहीं कहते। यदि मैं उन्हें चोर कहूँ तो पहले मैंने ही कहा था न कि, 'यह चोर नहीं हो सकता'। फिर मेरा ही सर्टिफिकेट बदलने का समय आया? तो क्या मैं एक कॉलेज के सर्टिफिकेट से भी गया-बीता हूँ? लो! तो इसका प्रमाण क्या है? तब कहता है, 'यह हमारा नियम'।

आत्मा को बिगाड़ने का साधन - 'शंका'

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, समाधान में रहना मुश्किल लगता है।

दादाश्री : समाधान किस तरह हो पाएगा? दुनिया में शंका का समाधान नहीं होता! सच्ची बात का समाधान होता है, शंका का समाधान कभी भी नहीं हो पाता।

शंका अर्थात् क्या? खुद के आत्मा को बिगाड़ने का साधन। शंका दुनिया में सब से खराब चीज़ है। शंका सौ प्रतिशत गलत होती है और जहाँ शंका नहीं रखता वहाँ पर शंका होती है। जहाँ विश्वास रखता है, वहाँ पर ही शंका होती है और जहाँ शंका है वहाँ कुछ है ही नहीं। यों सभी प्रकार से आप मार खाते हो। हमने तो 'ज्ञान' से देखा है कि आप सभी प्रकार से मार खाते रहते हो।

'ज्ञान' से शंका समाए

प्रश्नकर्ता : तब फिर मनुष्य की शंका किस तरह से निकल सकती है?

दादाश्री : कभी भी नहीं निकल सकती इसलिए शंका को घुसने ही नहीं दे तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह जो शंका घुस गई है, वह किस तरह निकलेगी?

दादाश्री : वह तो अगर हमारे पास विधि करवाए तो उसे उससे छुड़वा सकते हैं। पर अंदर शंका उत्पन्न नहीं होना, वही मुख्य चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन शंका का समाधान तो होना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, शंका जाएगी तब कुछ ठीक होगा। ऐसा है न, यहाँ रात को आप सो गए हों और एक इतना छोटा सा साँप घर में घुसते हुए दिखा, फिर आपको घर में सोना पड़े तो क्या होगा? शंका रहेगी न? वह साँप निकल गया हो लेकिन आपने देखा नहीं हो, तो आपको शंका

रहेगी या नहीं रहेगी? तो बाद में फिर क्या दशा होगी? उसके बाद नींद कितनी अच्छी आएगी?

प्रश्नकर्ता : नींद उड़ जाएगी!

दादाश्री : अब जो इस बारे में नहीं जानते, उन्हें नींद आएगी और जानने वाले लोग मन में ऐसा सोचते रहेंगे कि, 'अरे, हमने देखा है। इसलिए अब (हमें) नींद नहीं आएगी। लेकिन इन लोगों को तो सो जाने दो बेचारों को'! जो नहीं जानते वे खर्राटें लेने लगते हैं। पर जो जानकार है उसे तो नींद आएगी ही कैसे? क्योंकि उसे ज्ञान हो गया है कि इतना बड़ा साँप था। तो उसका अब क्या हो सकता है?

अत: शास्त्र क्या कहते हैं, कि साँप अंदर गया वह ज्ञान आपको हुआ था, जब ऐसा ज्ञान हो जाएगा कि साँप निकल गया है तभी आपका छुटकारा है। भले ही साँप निकल जाए, लेकिन अगर ऐसा ज्ञान नहीं हो जाता कि 'निकल गया,' तो आपके मन में शंका रहेगी और नींद नहीं आएगी। इधर-उधर करवट बदलते रहोगे। हम कहें, 'क्यों करवटें बदल रहे हो?' हाँ, यानी भीतर शंका रहती है कि 'साँप आ जाएगा तो? आ जाएगा तो?' यदि साँप आ जाता तो क्या ले जाता? जेब में से कुछ ले जाता?

प्रश्नकर्ता : जेब में से लेकर वह क्या करेगा?

दादाश्री : तब फिर और क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : डंक मारेगा।

दादाश्री : किसलिए? ऐसा होना नियम होगा या अनियम होगा? इस दुनिया में एक भी चीज़ बगैर नियम के एक क्षणभर भी नहीं होती। जो भी होता है वह नियमपूर्वक ही है। इसलिए उसमें शंका मत करना। जो कुछ होता है वह कभी भी नियम से बाहर होता ही नहीं है। इसलिए उसमें शंका मत करना। जो हो चुका है वह नियमपूर्वक ही था। अब वहाँ पर अपना ज्ञान क्या कहता है, कि ''साँप घुस गया तो कोई बात नहीं, 'व्यवस्थित' है। सो जा न चुपचाप'!' अपना यह ज्ञान तो उसे नि:शंक सुला देता है!

'ज्ञानी' के 'ज्ञान' से शंका जाती है! कुछ किसी से भी, साँप से भी छुआ नहीं जा सके, ऐसा यह जगत् है। 'हम' ज्ञान में देखकर कहते हैं कि यह जगत् एक क्षणभर के लिए भी अन्यायी नहीं हुआ है। जगत् की कोर्टें, न्यायाधीश, मध्यस्थ, सभी अन्याय वाले हो सकते हैं, परंतु जगत् अन्यायी नहीं हुआ है। इसलिए शंका मत करना।

प्रश्नकर्ता : यानी भय नहीं रखना है? साँप देखा तो भले ही देखा, परंतु उसका भय नहीं रखना है?

दादाश्री : नहीं रखने से भय नहीं रहेगा, ऐसा नहीं है, वह तो हो ही जाता है। अंदर ही अंदर शंका करता ही रहेगा। किसी से कुछ हो सके ऐसा नहीं है। वह तो ज्ञान में रहने से शंका जाएगी।

शंका है, सबसे बड़ा 'दु:ख'

इसलिए शंका तो किसी पर भी नहीं करनी चाहिए। आप घर पहुँचो तब आपकी बहन से कोई दूसरा व्यक्ति बात कर रहा हो, तब भी शंका नहीं करनी चाहिए। शंका तो सब से अधिक दु:ख देती है और वह पूरे 'ज्ञान' को ही खत्म कर देती है, फेंक देती है। 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ भी नहीं होगा और उस घड़ी आप बहन से कहो, 'यहाँ आ बहन, मुझे खाना दे दे'। इस तरह दोनों को अलग किया जा सकता है लेकिन शंका तो कभी

भी नहीं करनी चाहिए। शंका से दुःख ही खड़ा होता है। 'व्यवस्थित' में जो होना है वह होगा, लेकिन शंका नहीं रखनी है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन शंका भी उदयकर्म के कारण ही होती होगी न?

दादाश्री : शंका रखना वह उदयकर्म नहीं कहलाता। शंका रखने से तो तेरा भाव बिगड़ जाता है, तूने उसमें हाथ डाला। इसलिए वह दुःख ही देगी। शंका कभी भी नहीं करनी चाहिए।

आपकी बहन के साथ कोई बात कर रहा हो, लेकिन अब आपको तो मोक्ष में जाना है तो आपको शंका में नहीं पड़ना चाहिए। क्योंकि एक जन्म में तो 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ भी नहीं होगा। आप जागृत रहोगे तब भी नहीं होगा और अजागृत रहोगे तब भी नहीं होगा। अगर आप ज्ञानी हो तब भी बदलाव नहीं होगा और अज्ञानी हो तब भी बदलाव नहीं होगा। इसलिए शंका रखने का कोई कारण नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि कोई फर्क पड़ेगा ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, फर्क नहीं पड़ेगा और बहुत नुकसान है इस शंका में तो।

शंका है, बुद्धि का लकवा

प्रश्नकर्ता : हमें शंका नहीं करनी है, ठीक से दृढ़ निर्णय-निश्चय है, परंतु ऐसे कैसे आवरण आ जाते हैं, संयोग आ जाते हैं कि शंका होती ही रहती हैं? वे ऐसे कौन से कर्म होते हैं? उनका क्या कारण है?

दादाश्री : ममता की है इसलिए।

प्रश्नकर्ता : शंका करते हैं तो वह बात पांच प्रतिशत भी सच होगी तभी शंका होती है?

दादाश्री : नहीं, कुछ भी सच न हो तभी शंका होती है।

प्रश्नकर्ता : अपने आप तो शंका कैसे होगी? कुछ तो संयोग होने ही चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। लोगों को तो सती पर भी शंका होती है! सती पर शंका होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होती है न!

दादाश्री : तो फिर उसमें वहाँ क्या कारण है, थोड़ा कुछ दो प्रतिशत भी सत्य है क्या?

प्रश्नकर्ता : किसी ने आकर कहा हो कि भाई ये सती ऐसी हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन जिसने कहा है, उसे भी किस तरह से शंका हुई?

प्रश्नकर्ता : अब ऐसा हो न, कि शायद किसी ने देखा हो तो, कोई हमसे कहे, हम जानते हैं कि हमारी बात सौ की सौ प्रतिशत सच...

दादाश्री : नहीं, परंतु यह सब तो झूठ-मूठ में... शंका करना गलत है। शंका तो बुद्धि का लकवा है। जब बुद्धि को लकवा हो गया हो तब शंका होती है। इसलिए शंका के लिए हमने खास लिखा है कि शंका करना ही मत। यों ही व्यर्थ में शंका करके क्या करना है? सही हो, तो करना, परंतु कुछ नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : शंका करना, वह डिस्चार्ज कर्म है, पिछले जन्म के कुछ ऋणानुबंध की वजह से ही शंका होती है क्या? उस व्यक्ति के साथ हमारा कुछ लेन-देन हो तभी होती है?

दादाश्री : आपको दुःख भुगतना हो तब होती है।

प्रश्नकर्ता : और उस व्यक्ति को हमें दुःख देना हो, ऐसा होता है क्या?

दादाश्री : नहीं, सामने वाला व्यक्ति किसी को दुःख देता ही नहीं है। खुद, अपने आप को ही दुःख देता है।

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, शंका के कारण में सामने वाला व्यक्ति निमित्त रूप बन जाता है, जैसे जेब काटने वाला जेब काटकर अभी तो जलेबी खा रहा है, परंतु फिर जब वह पकड़ा जाएगा तब वह नहीं भुगतेगा?

दादाश्री : जब पकड़ा जाएगा तब ऐसा कुछ भुगतेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने बहुत अच्छा बताया कि जब दुःख भुगतना हो, तब शंका होती है!

दादाश्री : शांति हो, आनंद हो, परंतु दुःख भुगतने का समय आया हो तो शंका उत्पन्न होती है।

यह तो देखा उसका ज़हर है

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन में शंका सहित देखने की ग्रंथि पड़ गई हो तो वहाँ पर कैसा 'एडजस्टमेन्ट' लेना चाहिए?

दादाश्री : यह जो आपको दिखाई देता है कि इसका चारित्र खराब है। तो क्या पहले ऐसा नहीं था? यह क्या अचानक उत्पन्न हो गया है? यानी कि यह जगत् समझ लेने जैसा है, कि यह तो ऐसा ही है। इस काल में चारित्र संबंधी किसी का देखना ही नहीं चाहिए। इस काल में तो सभी जगह ऐसा ही होता है। खुले तौर पर नहीं होता, लेकिन मन तो बिगड़ता ही है। उसमें भी स्त्री चारित्र तो सिर्फ कपट और मोह का ही संग्रहस्थान है, इसीलिए तो स्त्री-जन्म मिलता है। इनमें सब से अच्छा यही है कि जो विषय से मुक्त हो गए हों।

प्रश्नकर्ता : इस चारित्र में तो ऐसा ही होता है, वह जानते हैं। फिर भी जब मन शंका करता है तब तन्मयाकार हो जाते हैं। वहाँ पर कौन सा 'एडजस्टमेन्ट' लेना चाहिए?

दादाश्री : आत्मा हो जाने के बाद और किसी चीज़ में पड़ना ही मत। यह सब 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' का है। आपको 'होम' में रहना है। आत्मा में रहो न! ऐसा 'ज्ञान' बार-बार मिले ऐसा नहीं है, इसलिए काम निकाल लो।

एक व्यक्ति को खुद की 'पत्नी' पर शंका होती रहती थी। उससे मैंने पूछा कि शंका किसलिए होती है? तूने देख लिया इसलिए शंका होती है? जब तक नहीं देखा था, तब तक क्या ऐसा नहीं हो रहा था? लोग तो जो पकड़ा जाता है, उसी को 'चोर' कहते हैं। लेकिन जो पकड़े नहीं गए, वे सभी अंदर से चोर ही हैं। लेकिन ये तो, जो पकड़ा गया, उसी को 'चोर' कहते हैं। अरे, उसे किसलिए चोर कहता है? वह तो सीधा था। कम चोरियाँ की है इसलिए पकड़ा गया। क्या ज़्यादा चोरी करने वाले पकड़े जाते होंगे?

प्रश्नकर्ता : लेकिन पकड़े जाते हैं तब चोर कहलाते हैं न!

दादाश्री : नहीं, जो कम चोरियाँ करते हैं, वे पकड़े जाते हैं और वे पकड़े जाते हैं इसलिए लोग उन्हें चोर कहते हैं। अरे, चोर तो वे हैं जो पकड़ में नहीं आते हैं लेकिन जगत् तो ऐसा ही है।

तब फिर वह व्यक्ति मेरा विज्ञान पूरी तरह से समझ गया। फिर उसने मुझसे कहा कि, 'मेरी वाइफ को अब कोई दूसरा हाथ लगाए, तब भी मैं गुस्सा नहीं करूँगा'। हाँ, ऐसा होना चाहिए। मोक्ष में जाना हो तो ऐसा है। वर्ना झगड़े करते रहो आप। आपकी 'वाइफ' या आपकी स्त्री इस

दुषमकाल में आपकी हो ही नहीं सकती और ऐसी गलत आशा रखना ही बेकार है। यह दुषमकाल है, इसलिए इस दुषमकाल में तो जितने दिन आपको रोटियाँ खिलाती है, उतने दिन तक आपकी वर्ना अगर किसी और को खिलाए तो उसकी।

इसलिए सभी 'महात्मा'ओं से कह दिया है कि शंका मत रखना। और फिर मेरा कहना है कि, जब तक नहीं देखा हो, तब तक उसे सत्य मानते ही क्यों हो, इस कलियुग में? यह सब घोटाले वाला है। जो मैंने देखा है उसका यदि मैं आपको वर्णन करूँ तो कोई भी व्यक्ति जीवित ही नहीं रहेगा। तो अब ऐसे काल में अकेले पड़े रहो मस्ती में और ऐसा 'ज्ञान' साथ में हो तो उसके जैसा तो कुछ भी नहीं है।

यानी आपको समझ में आ गया न, कि जब तक नहीं देखा, तब तक कुछ नहीं होता है। यह तो देखा उसका ज़हर है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिख गया इसीलिए ऐसा होता है।

दादाश्री : यह सारा जगत् अंधेरे में (अनजानपने में) घोटाले में ही चल रहा है। हमें यह सब 'ज्ञान' में दिखाई दिया लेकिन आपको नहीं दिखाई दिया इसलिए आप इसे देखते हो और भड़क जाते हो! अरे, भड़कते क्यों हो? इसमें तो सब, यह तो ऐसा ही चल रहा है, लेकिन आपको दिखाई नहीं देता है। इसमें भड़कने जैसा है ही क्या? आप आत्मा हो, तो भड़कने जैसा कहाँ रहा? यह तो सब जो 'चार्ज' हो चुका है, उसी का 'डिस्चार्ज' है! जगत् शुद्ध (पूर्णरूप से) 'डिस्चार्जमय' ही है। यह जगत् 'डिस्चार्ज' से बाहर नहीं है। तभी तो हम कहते हैं न कि 'डिस्चार्जमय' है इसलिए कोई गुनहगार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो इसमें भी कर्म का सिद्धांत काम करता है न?

दादाश्री : हाँ, कर्म का सिद्धांत ही काम कर रहा है और कुछ भी नहीं। मनुष्य का दोष नहीं है, ये कर्म ही घुमाते हैं बेचारे को। लेकिन उसमें शंका रखे न, तो वह मर जाएगा बिना बात के।

चारित्र संबंधी 'सेफसाइड'

अत: जिसे पत्नी के चारित्र संबंधी शांति चाहिए, उसे एकदम काली रंग की दाग़ वाली स्त्री लानी चाहिए ताकि उसका कोई ग्राहक ही न हो कोई, और उसे संभाले ही नहीं। और वही कहे कि, 'मुझे संभालने वाला और कोई नहीं है। ये एक पति मिले हैं, वही संभालते हैं'। तब वह आपके प्रति 'सिन्सियर' रहेगी, बहुत 'सिन्सियर' रहेगी। वर्ना, सुंदर होगी तो उसे तो लोग भोगेंगे ही। सुंदर होगी तो लोगों की दृष्टि बिगड़ेगी ही! कोई सुंदर पत्नी लाए तो हमें यही विचार आता है कि 'इसकी क्या दशा होगी'! काली दाग़ वाली हो, तभी 'सेफसाइड' रहती है।

पत्नी बहुत सुंदर हो, तब पति भगवान को भूल जाएगा न! और पति बहुत सुंदर हो तो पत्नी भी भगवान को भूल जाएगी! इसलिए सबकुछ संतुलित हो तो अच्छा है। अपने बड़े बूढ़े तो ऐसा कहते थे कि *'खेत राखवुं चोपाट और बैरुं राखवुं कोबाड'* ('खेत रखना समतल और पत्नी रखना बदसूरत') ऐसा किसलिए कहते थे? कि यदि पत्नी बहुत सुंदर होगी तो कोई नज़र बिगाड़ेगा। इसके बजाय तो पत्नी ज़रा सी बदसूरत ही अच्छी, ताकि कोई नज़र तो नहीं बिगाड़ेगा न! ये बूढ़े लोग अलग तरह से कहते थे, वे धर्म की दृष्टि से नहीं कहते थे। मैं धर्म की दृष्टि से कहना चाहता हूँ। बहू बदसूरत

होगी, तो आपको कोई भय ही नहीं रहेगा न! घर से बाहर जाए फिर भी कोई नज़र बिगाड़ेगा ही नहीं न! अपने बड़े-बूढ़े तो बहुत पक्के थे लेकिन मैं जो कहना चाहता हूँ वह ऐसा नहीं है, वह अलग है। वह बदसूरत होगी न, तो आपके मन को बहुत परेशान नहीं करेगी, भूत बनकर चिपटेगी नहीं।

चारित्र संबंधी शंका करने वाला मोक्ष खो देता है

ये लोग तो, 'वाइफ' ज़रा सी भी देर से आई तो भी शंका करते हैं। शंका नहीं करनी चाहिए। ऋणानुबंध से बाहर कुछ भी नहीं होगा। वह घर पर आए तो उसे समझाना, लेकिन शंका मत करना। शंका तो बल्कि उसे और अधिक पानी छिड़केगी। हाँ, सावधान ज़रूर करना लेकिन कोई भी शंका मत रखना। शंका रखने वाला मोक्ष खो देता है।

अत: यदि आपको मुक्त होना है, मोक्ष में जाना है तो आपको शंका नहीं करनी चाहिए। कोई दूसरा व्यक्ति आपकी पत्नी के गले में हाथ डालकर घूम रहा हो और आपने देख लिया, तो क्या आपको ज़हर खा लेना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा किसलिए करूँगा?

दादाश्री : तो फिर क्या करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : थोड़ा नाटक करना पड़ेगा, फिर समझाऊँगा। फिर तो जो करे वह 'व्यवस्थित'।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। अब आपको 'वाइफ' पर या घर में किसी पर भी ज़रा सी भी शंका नहीं होगी न! क्योंकि ये सब 'फाइलें' हैं। इसमें शंका करने जैसा क्या है? जो भी हिसाब होगा, जो ऋणानुबंध होगा, उस हिसाब से ये फाइलें भटकेंगी जबकि आपको तो मोक्ष में जाना है।

सबसे बड़ा गुनाह है शंकाशील होना

अत: हमने क्या कहा है कि फाइलों का समभाव से *निकाल* करो। ये सभी फाइलें हैं। ये कहीं आपकी बेटियाँ नहीं हैं या आपकी बहुएँ नहीं हैं। ये बहुएँ-बेटियाँ ये सभी 'फाइलें' हैं। 'फाइलों' का समभाव से *निकाल* करो। अगर लकवा हो जाए न, तब कोई आपका सगा नहीं रहेगा। बल्कि कई दिन हो जाएँगे न, तो लोग सब चिढ़ने लगेंगे। वह लकवे वाला भी मन में समझ जाता है कि सभी चिढ़ रहे हैं। लेकिन क्या करे फिर? इन 'दादा' द्वारा दिखाया हुआ मोक्ष सीधा है, एक अवतारी है। इसलिए संयम में रहो और 'फाइलों' का समभाव से *निकाल* करो। बेटी हो या पत्नी हो या कोई और हो, लेकिन सभी का समभाव से *निकाल* करो। कोई किसी की बेटी नहीं होती दुनिया में। यह सब कर्म के उदय के अधीन है। जिसे 'ज्ञान' नहीं मिला है, उसे हम ऐसा कुछ कह नहीं सकते। ऐसा कहेंगे तब तो वह लड़ने के लिए तैयार हो जाएगा।

अब मोक्ष कब बिगड़ेगा? भीतर असंयम हो जाएगा तब! असंयम हो जाए, अपना 'ज्ञान' ऐसा है ही नहीं। निरंतर संयम वाला 'ज्ञान' है। सिर्फ, शंका की कि दु:ख आएगा!

इसलिए, एक तो शंका करनी - किसी भी प्रकार से शंकाशील बनना वह सब से बड़ा गुनाह है। नौ बेटियों के बाप को नि:शंक घूमते हुए मैंने देखा है और वह भी भयंकर कलियुग में! और नौ की नौ लड़कियों की शादी हुई। यदि वह शंका में रहा होता तो कितना जी सकता था? इसलिए कभी भी शंका मत करना।

'व्यवस्थित' है इसलिए डरना मत

यानी इनमें से कुछ भी खुद का है ही नहीं।

यह सब पराया है। इसलिए अगर व्यवहार में रहना हो तो व्यवहार में मज़बूत बनो और मोक्ष में जाना हो तो मोक्ष के लायक बनो! जहाँ पर यह देह भी खुद का नहीं है वहाँ पर स्त्री अपनी कैसे हो सकती है? बेटी अपनी कैसे हो सकती है? यानी आपको तो हर प्रकार से सोच लेना चाहिए कि 'स्त्री को उठाकर ले जाएँ तो क्या करना है?'

जो होना है, उसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता, 'व्यवस्थित' ऐसा ही है। इसलिए डरना मत। इसी वजह से ऐसा कहा है कि 'व्यवस्थित' है! यदि (ऐसा कुछ) नहीं देखा हो तो तब तक कहेगा, 'मेरी पत्नी' और देख लिया तो छटपटाहट! अरे, पहले से ऐसा ही था। इसमें नया ढूँढना ही मत।

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'दादा' ने बहुत ढील दे दी है।

दादाश्री : मेरा कहना यह है कि दुषमकाल में अगर हम झूठी आशा रखें तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है न! और इस सरकार ने भी 'डाइवोर्स' का नियम बनाया है। सरकार पहले से ही जानती थी कि ऐसा होगा। इसलिए पहले नियम बनता है। अर्थात् हमेशा दवाई का पौधा पहले उगकर तैयार होता है, उसके बाद रोग उत्पन्न होता है। उसी तरह पहले ये नियम बनते हैं, उसके बाद लोगों में ऐसी घटनाएँ होती हैं!

'व्यवस्थित' से निःशंकता

जगत् अधिक तो शंका से ही दुःखी है। शंका तो मनुष्य को अधोगति में ले जाती है। शंका से कुछ नहीं होता है। क्योंकि 'व्यवस्थित' के नियम को तोड़ने वाला कोई है ही नहीं। 'व्यवस्थित' के नियम को कोई नहीं तोड़ सकता, इसलिए शंका करके क्यों बेकार में परेशान होता है?

'व्यवस्थित' का अर्थ क्या है कि जो 'है' वह है, जो 'नहीं है' वह नहीं है। जो 'है' वह है, वह 'नहीं है' नहीं होगा और जो 'नहीं' है वह नहीं है, वह 'है' नहीं होगा। इसलिए जो 'है' वह है, उसमें तू कुछ इधर-उधर करने जाएगा तो भी 'है' ही और जो 'नहीं है' उसमें इधर-उधर करने जाएगा तो भी 'नहीं' ही है। इसलिए निःशंक हो जाओ। इस 'ज्ञान' के बाद अब आप आत्मा में निःशंक हो गए कि हमें यह जो लक्ष बैठा है, वही आत्मा है और बाकी सबकुछ *निकाली* बाबत हैं!

अतः यदि शंका नहीं होगी तो कोई दुःख आएगा ही नहीं। शंका ही नहीं रहे तो फिर क्या? और शंका होगी तब भी आपको उसे हटा देना है, ''आप क्यों आते हो? हम हैं न? आपको सलाह देने को किसने कहा है? अब हम किसी वकील की सलाह नहीं लेते हैं और अन्य किसी की भी हम सलाह नहीं लेते हैं। हम तो 'दादा' की सलाह लेते हैं, बस! जब जो रोग होता है तब 'दादा' को दिखा देते हैं हम और हमें किसी को भी सलाह, 'नोटिस' नहीं देना है। लोग भले ही हमें दें।'' उसमें भी, 'व्यवस्थित' से बाहर कोई कुछ कर सकता है क्या? तो अब विश्वास हो गया है न, कि 'व्यवस्थित' से बाहर कोई कुछ नहीं कर सकता?

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' की जो आज्ञा है, वह अभी भी ठीक से समझ में नहीं आती है।

दादाश्री : 'व्यवस्थित' है, उस पर शंका होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण 'व्यवस्थित' है क्या?

दादाश्री : 'व्यवस्थित' में ज़रा सी शंका, वही दुःख है! दुःख लाना हो तो कहाँ लेने जाना

है? तब कहते हैं, 'व्यवस्थित' में ज़रा सी शंका, एक बाल जितनी भी शंका! यह व्यवस्थित तो एक्ज़ेक्ट वस्तु है।

पाँच आज्ञा से निःशंक

प्रश्नकर्ता : समझ में आया तो है, परंतु उसका हमें एडवान्स में कैसे ख्याल आएगा?

दादाश्री : शंका नहीं करोगे तो सबकुछ ख्याल आएगा, आप ही मालिक हो इसलिए। 'क्या होगा अब!' ऐसा हुआ कि वहाँ पर फिर सारा ज्ञान फ्रेक्चर हो जाएगा, ऐसा आगे होगा तो।

प्रश्नकर्ता : यानी हमें 'क्या होगा', ऐसी शंका ही नहीं करनी है?

दादाश्री : वैसी शंका होनी ही नहीं चाहिए। मैं आपसे यह कह रहा हूँ कि नहीं करना तब भी होगी।

प्रश्नकर्ता : तो फिर क्या करना है? हमें तो फिर हो ही जाएगी न?

दादाश्री : इसका जवाब तो हम यही देंगे कि पाँच आज्ञा का ठीक तरह से पालन करना चाहिए, परंतु उसके लिए भी आप कहोगे कि पाँच आज्ञा का पालन नहीं होता, उसका क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : अब, आपने हमारे बारे में यह शंका की। अब (आज्ञा) पालन नहीं होता, वह बात अलग है, परंतु प्रयत्न तो पूरा करते हैं।

दादाश्री : पाँच आज्ञा का पालन होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, पाँच आज्ञा का पालन हो या पालन न हो, उसके लिए प्रयत्न तो करते हैं। पाँच में से एकाध शुद्धात्मा की आज्ञा का पालन तो होता है, कभी इधर-उधर हो जाती है। जिसके प्रति द्वेष या राग हो, उसके लिए तो ऐसा कहते हैं कि इसमें शुद्धात्मा तो है, उतना तो पालन होता है। फिर आगे का आयोजन ऑटोमेटिक हो जाए तो हो जाता है और लगातार काम हो या लगातार (कर्मों का) फोर्स हो, तो गाड़ी पलट जाती है, परंतु पहली बार तो पालन करने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन दूसरी बार गाड़ी टकरा भी जाती है, कुछ हो जाए उसका हर्ज़ नहीं होता फिर। दो गाड़ी टकराए, एक्सिडेन्ट हो जाए तब भी वह शुद्धात्मा का संकल्प रहता है तब तक, फिर वापस टकरा जाए तो भी कुछ नहीं, झटककर खड़े तो हो जाते हैं। अभी भी गाड़ी टकराती तो है, गाड़ी टकराती नहीं, ऐसा अभी भी नहीं होता। ऐसा बहुत कम लोगों के साथ... कोई किस्मत वाले के साथ होता है कि जिसकी गाड़ी टकराती ही न हो आमने-सामने, जो कुछ बहुत अच्छा मटिरियल लेकर आया हो उसके साथ ही ऐसा होता है।

दादाश्री : वह तो व्यवस्थित पर उसकी श्रद्धा.. व्यवस्थित वह दृढ़ हो जाए, तो भीतर निश्चय बहुत अच्छा रहता है, परंतु उसे शंका-कुशंका होती रहती है।

प्रश्नकर्ता : शंका-कुशंका तो पुराने अनुभव के आधार पर ही होती रहती है न!

दादाश्री : पुराने अनुभव के आधार पर। अब इस नये आधार से नहीं, पुराने की वजह से।

प्रश्नकर्ता : हाँ, फिर बुद्धि सारे ऑल्टर्नेटिव बताती है न, कि ऐसा हो जाएगा तो ऐसा होगा, ऐसा हो जाएगा तो ऐसा होगा। वह तो जितनी डेवलप हुई बुद्धि हो, वह तो पच्चीस तरह के ऑल्टर्नेटिव बता देती है। उसके परिणाम सहित बताती है कि इसका ऐसा हो जाएगा, तो फिर अब, उस समय आप कहते हैं कि शंका-कुशंका हो गई, तो शंका-कुशंका तो होगी ही न?

दादाश्री : बुद्धि तो हमें भी बताती है, हम मुंबई में सांताक्रूज स्टेशन से दादर जाते हैं न, तो बुद्धि बताती है कि एक्सिडेन्ट हो जाएगा तो? तब हम कहते हैं कि ठीक है, एक्सिडेन्ट हो जाएगा, वह हमने नोट किया। अब और कुछ बात कर। आगे की बात, फिर सत्संग की बातें करती है।

पाँच आज्ञा से सभी पहेलियों का समाधान

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में जो गाँठें फूटती हैं, वे ऐसी-ऐसी फूटती हैं कि उनका समाधान लाना कठिन हो जाता है?

दादाश्री : अपने ये 'पाँच वाक्य' हैं, वे आख़िर में समाधान ले आए, ऐसे हैं। जल्दी या देर से परंतु वे समाधान ले आते हैं। बाकी और किसी भी प्रकार से समाधान नहीं हो सकता। इसीलिए यह जगत् गुह्य पहेली है। 'द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ।' वह कभी भी सोल्व होती ही नहीं। पूरे दिन खुद व्यवहार में उलझा हुआ ही होता है, फिर किस तरह वह आगे प्रगति करेगा? कोई न कोई पहेलियाँ खड़ी होती ही रहेगी। सामने कोई मिला कि पहेली खड़ी हुई।

प्रश्नकर्ता : एक पहेली पूरी की हो, वहाँ दूसरी पहेली मुँह फाड़कर खड़ी ही होती है।

दादाश्री : हाँ, यह तो पहेलियों का संग्रहस्थान है। परंतु यदि तू अपने आपको पहचान जाए तो हो गया तेरा कल्याण! वर्ना ये पहेलियाँ तो हैं ही डूबने के लिए! यह सब पराई पीड़ा है, ऐसा समझ में आ जाए, तो (वह भी) अनुभवज्ञान है। अनुभव में आएगा कि यह पीड़ा मेरी नहीं है, पराई है, तब भी कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपने तो इतना अधिक सरल-सुगम मार्ग बता दिया है लेकिन फिर यदि सतत जागृति नहीं रखेंगे और यदि पाँच आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो दादा ने जो ज्ञान दिया है वह शस्त्र के रूप में परिणमित होगा।

दादाश्री : तो फिर भटक जाएगा। फिर भी बिगड़ा हुआ घी दीये में काम आए बगैर तो रहेगा नहीं, कई जन्म कम हो जाएँगे। लेकिन आप जैसा चाहते हो, उस स्थान पर जल्दी नहीं पहुँच सकोगे।

'कहने वाला' और करने वाला' दोनों अलग

प्रश्नकर्ता : अब इस ज्ञान के बाद अगर शंका हो तो उस समय हमें क्या करना है?

दादाश्री : आपको देखते रहना है, जो शंका आती है उसे।

प्रश्नकर्ता : शंका के लिए हमें कोई प्रतिभाव नहीं देना है?

दादाश्री : कुछ भी नहीं, अपने आप ही 'एडजस्टमेन्ट' लेगा। आपको देखते रहना है कि, 'ओहो, चंदूभाई को शंका हुई है'! और जब शंका हो, तब वह संताप में ही रहता है। भयंकर दुःखी रहता है, बेहद दुःख होते हैं उसे। क्योंकि भगवान ने कहा है कि शंका ही सब से बड़ा गुनाह है और वह उसे तुरंत ही दुःख देती है। वह शंका जब सामने वाले को दुःख देगी तब की बात तब, लेकिन खुद को भयंकर दुःख देती है और प्रतिभाव करने से तो शंका का दुःख बढ़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी कोई भी कार्य करने में शंका-कुशंका होती रहती है, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह झंझट वाला ही है न! वह ज़रा मुश्किल में डाल देता है। संसार में किसी

भी प्रकार की शंका करना गुनाह है। शंका करने से काम नहीं होता। ये 'ज्ञान' प्राप्त हुआ है, तो अब नि:शंक मन से काम करते जाओ न! खुद की अक्ल लगाने गए तो बिगड़ेगा और सहज छोड़ दोगे तो काम हो जाएगा। इसी तरह काम करते रहने के बजाय अगर सहज छोड़ दोगे तो काम अच्छा होगा। जहाँ थोड़ी सी भी शंका रहे वहाँ किसी भी प्रकार का कार्य नहीं हो पाता।

प्रश्नकर्ता : तो क्या करे फिर?

दादाश्री : करना क्या है? 'आपको' 'चंदूभाई' से कहना है कि, 'शंका-कुशंका मत करना। जो आए वह करना है'। बस, इतना ही। 'वह' शंका-कुशंका करे तो उसे कहने वाले 'आप' हैं न, साथ के साथ। पहले तो कोई कहने वाला था ही नहीं इसलिए उलझन में रहते थे। अब तो वह कहने वाला है न!

ज्ञान जागृति से टले शंका

प्रश्नकर्ता : तो फिर शंका के समय हमें जागृति रखकर जुदा रहना है?

दादाश्री : उस समय तो जुदा रहना ही है, लेकिन हमेशा के लिए जुदा रहना है। एक दिन रखकर देखो, हफ्ते में एक दिन रखकर देखो। तो आपको समझ में आ जाएगा कि दूसरे दिन ऐसा रखेंगे तो परेशानी नहीं होगी, गिर नहीं जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : गिर जाने के बजाय उलझन हो जाती है, उसकी परेशानी होती है।

दादाश्री : वह उलझन तो, पहले की जो प्रेक्टिस है न, वह जाती नहीं है। छूटती नहीं है वह। बाकी, अब शंका की ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अगर हम अलग हो जाएँ, तो वह शंका टूट जाती है?

दादाश्री : हाँ, शंका अपने आप ही बिखर जाती है।

प्रश्नकर्ता : अत: अब जागृति ही अधिक रखनी है।

दादाश्री : देखने वाला हमेशा जागृत ही होता है। यदि देखने वाला है तो जागृत होगा। ज्ञाता-दृष्टा, वह अगर जागृत होगा तभी ज्ञाता-दृष्टा कहलाएगा। बाकी, जितनी अजागृति, उतनी ही मार पड़ती है।

शंका है पुद्गल, हम चेतन

शंका होने लगे तो सबकुछ चिपट जाता है। भीतर जो बैठे हुए हैं वे सभी जकड़ लेते हैं। वे चेतन भाव नहीं हैं, जड़ भाव चेतन का क्या कर सकते हैं?

अब पुरुष बनने के बाद उल्टे-सीधे विचार नहीं आएँगे और अगर आ जाएँ तो उन्हें सुनना मत। वे सभी *पुद्गल* भाव हैं। यानी अगर वे आएँ तो उन्हें आप सुनना मत। फिर कोई नाम ही नहीं देगा न! कुत्ते भौंकते हैं, बस उतना ही। हाथी के पीछे कुत्ते भौंकते हैं न, तब हाथी पीछे नहीं देखता। वह समझ जाता है कि कुत्ते हैं। सौ-दो सौ कुत्ते हों और किसी हाथी के पीछे भौंक रहे हों तो क्या वह पीछे देखता है कि कौन-कौन भौंक रहा है? ये *पुद्गल* भाव भी उसी प्रकार के हैं। लेकिन अज्ञानी का उससे टकराव हो जाता है, क्योंकि वह हाथी नहीं बना है न! अज्ञानी व्यक्ति तुरंत एकाकार हो जाता है, देर ही नहीं लगती।

'कोई कुछ भी नहीं करने वाला', उसे शूरवीरता कहते हैं। वह *पुद्गल* और हम हैं चेतन, आत्मा, अनंत शक्ति वाले!

प्रश्नकर्ता : वे विचार वगैरह जब आएँगे तब देख लेंगे।

दादाश्री : आएँगे ही कैसे लेकिन? देख लेने को भी नहीं रहेगा और अगर आएँ तो हमें क्या लेना-देना? वह अलग बिरादरी है, अपनी अलग बिरादरी। बिरादरी अलग, जाति अलग! इसलिए उससे कुछ नहीं होता। यह तो कुछ हो चुका है, ऐसा देखा भी नहीं है। ये तो सिर्फ शंकाएँ हैं और जो शंका होती है, वह भी *पुद्गल* भाव है। कुछ होगा नहीं और सिर्फ अपना 'वेस्ट ऑफ टाइम एन्ड एनर्जी' है। हाँ, वह यदि कभी चेतन भाव होता तो हरा देता लेकिन ऐसा तो है नहीं। फिर क्या? वे जड़ चीज़ें हैं, वे चेतन का क्या कर सकती हैं? वे यदि चेतन होतीं तो बात अलग थी। मन-वचन-काया के तमाम लेपायमान भावों को जड़ भाव कहा है और खुद निर्लेप ही है। फिर लेपायमान क्या करेंगे? वे जड़ भाव और प्राकृत भाव हैं, ऐसा हम लोग बोलते हैं न?

प्रश्नकर्ता : बोलते हैं न!

दादाश्री : तो फिर यह प्रश्न ही खड़ा नहीं होता न, कि 'ऐसा क्या होगा और क्या नहीं'! मन-वचन-काया के तमाम लेपायमान भाव वे जड़ भाव हैं - प्राकृत भाव हैं, चेतन भाव नहीं है। वह जाति अलग, भेष अलग। उनका और अपना क्या लेना-देना?

शंका के इफेक्ट से 'हम' अलग

प्रश्नकर्ता : अब शंका का 'इफेक्ट' तुरंत तो होता ही है लेकिन ऐसा 'इफेक्ट' अगले जन्म में भी रहेगा क्या?

दादाश्री : जिसका बीज डलता है न, उसका फल आता है। इसलिए बीज में से ही निकाल देना है। शंका का बीज उग जाए न, तो आपको पता चल जाता है कि यह कपास का पौधा नहीं है लेकिन दूसरा पौधा है। इसलिए उसे उखाड़कर फेंक देना है ताकि फिर से उसका बीज ही नहीं आए न! बाली उगेगी तब जाकर फिर बीज डलेंगे न!

प्रश्नकर्ता : फिर दूसरे जन्म में बाधक नहीं होगा?

दादाश्री : बीज नहीं डलेंगे तो दूसरे जन्म में कुछ भी असर नहीं होगा। यह पिछले जन्म का बीज पड़ा हुआ था, उसी वजह से यह शंका उत्पन्न हुई, इसलिए अब बीज ही उत्पन्न नहीं होने देना है। अत: यह जगत् शंका करने जैसा नहीं है। चैन से सो जाना।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि नि:शंक हो जाए तभी निर्दोष दिखाई देते हैं।

दादाश्री : इसलिए तो मुझे निर्दोष दिखाई देते हैं। अब आप शुद्धात्मा हो गए, उसके बाद मन नहीं बदलेगा, वह 'डिस्चार्ज' के रूप में है। मन शंकालु हो तो शंकालु और उल्टा कहे तो उल्टा, उसमें घबराने का कोई कारण नहीं है। 'आपको' देखते रहना है। वह कहेगा, 'हम मर जाएँगे'। तब भी क्या? कहना, 'जो होना हो वह होगा, उसमें भी हमें हर्ज नहीं है।'

सेंक देते हैं, शंका के बीज

प्रश्नकर्ता : शंका तो बिल्कुल पसंद ही नहीं है, दादा। लेकिन *निकाल* नहीं होता इसलिए फिर 'पेन्डिंग' रहा करती है।

दादाश्री : वापस 'पेन्डिंग' पड़ी रहती है?! हल नहीं ला देते?! 'ए स्क्वेर, बी स्क्वेर', ऐसा वह 'एलजेब्रा' में केन्सल कर देते हो न, उस तरह से? जिसे 'एलजेब्रा' आता है न, उसे सब आता है।

शंका से आपको सभी परेशानियाँ खड़ी होती हैं, तब फिर नींद में विघ्न डालती है कभी?

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं है लेकिन अगर *निकाल* नहीं होता है तो वापस आती है।

दादाश्री : अब क्या करोगे? सेंक दो न! तो फिर उगेंगे नहीं। जो बीज सेंककर रख दिए, वे फिर उगेंगे नहीं। उगेंगे तब परेशानी है न!

इसलिए आपको ऐसा कहना चाहिए कि, 'दादा' के 'फॉलोअर्स' होकर आपको शर्म नहीं आती? वर्ना कहना, 'दो तमाचे मार दूँगा, शंका क्यों कर रहा है?' ऐसे डाँटना। दूसरे डाँटें उसके बजाय 'आप' डाँटो तो क्या बुरा है? कौन डाँटे तो अच्छा? अपने आपको ही डाँटे तो अच्छा, लोगों की मार खाने के बजाय!

प्रश्नकर्ता : यह तो, मार खाता है तब भी नहीं जाती।

दादाश्री : हाँ, मार खाने पर भी नहीं जाती इसीलिए यह बात निकली। शंका जाने वाली हो, तब बात निकलती है। नहीं तो बात नहीं निकलती।

काम सारा पद्धतिपूर्वक करो, लेकिन शंका मत करना। इस 'रेल्वे' के सामने ज़रा सी भी भूल करे, निमंत्रण दें, तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : कट जाएगा।

दादाश्री : वहाँ कितना सयाना रहता है! किसलिए सयाने रहते हैं लोग? क्योंकि वह तुरंत फल देता है इसलिए। जबकि इस शंका का फल देर से मिलता है। इसका फल क्या आएगा, वह आज दिखाई नहीं देता इसलिए इस प्रकार निमंत्रित करते हैं। शंका को निमंत्रण देना, वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है!

प्रश्नकर्ता : आगे के लिए फिर से बीज डलता है न, दादा?

दादाश्री : अरे, बीज की कहाँ बात कर रहे हो! आज की शंका के निमंत्रण से तो, पूरे जगत् की बस्ती खड़ी हो जाती है! शंका तो ठेठ 'ज्ञानी पुरुष' तक का उल्टा दिखा देती है। यह शंका, डायन घुस गई तो फिर क्या नहीं दिखाएगी?

प्रश्नकर्ता : सबकुछ दिखाएगी।

दादाश्री : 'दादा' का भी उल्टा दिखाएगी। इन 'दादा' पर तो एक भी शंका की न, तो अधोगति में चला जाएगा। एक भी शंका करने जैसे नहीं हैं ये 'दादा'! 'वर्ल्ड' में ऐसे नि:शंक पुरुष कहीं होते ही नहीं हैं।

सुखा दो शंकारूपी पेड़ को...

आप इस तरफ गए हों और वहाँ से कोई व्यक्ति आ रहा हो। वह व्यक्ति किसी स्त्री के कंधे पर हाथ रखकर चल रहा हो और आपकी नज़र पड़े तो क्या होगा आपको? उसने हाथ किसलिए रखा वह तो वही बेचारा जाने! लेकिन आपको क्या होगा? और वह शंका घुसने के बाद, कितने सारे बीज उग जाते हैं फिर! बबूल, नीम, आम, अंदर तूफान! यह शंका तो डायन से भी अधिक खराब चीज़ है। डायन का चिपटना तो अच्छा है कि ओझा निकाल देता है। लेकिन इस शंका को कौन निकाले? हम निकाल देते हैं आपकी शंकाएँ! बाकी, शंका कोई नहीं निकाल सकता।

प्रश्नकर्ता : पिछला याद करने से शंका होती है।

दादाश्री : उसे याद ही नहीं करना है। बीता हुआ भूल जाना। बीती हुई तिथि तो ब्राह्मण भी नहीं देखते। ब्राह्मण से कहें, 'हमारी बेटी पंद्रह दिन पहले विधवा हो गई थी या नहीं?' तो ब्राह्मण कहेगा, 'ऐसा कोई पूछता होगा क्या? जिस दिन वह विधवा हुई थी, वह तिथी तो गई'।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी-कभी शंका हो जाती है।

दादाश्री : भले ही हो, लेकिन कितने सारे पेड़ उग निकलते हैं फिर! बीज एक और सत्रह सौ तरह की वनस्पतियाँ उग निकलती हैं!

प्रश्नकर्ता : पूरा वन बन जाता है।

दादाश्री : हाँ, पूरा वन बन जाता है। बाग में से जंगल बन जाता है। इन 'दादा' ने महामुश्किल से बगीचा बनाया होता है, उसमें फिर जंगल बन जाता है। इतना बड़ा बगीचा, वापस जंगल बन जाता है! अरे, उस गुलाब को रोपते-रोपते तो 'दादा' का दम निकल गया। देखो, जंगल मत बना देना! जंगल मत बनने देना। अब नहीं बनने दोगे न?

यानी कि शंका से ही यह जगत् खड़ा है। जिस पेड़ को सुखाना है, शंका करके उसी में पानी छिड़कते हैं तो उससे वह और अधिक मज़बूत बनता है। अत: यह जगत् किसी भी प्रकार की शंका करने जैसा नहीं है।

चार्जिंग पोइन्ट से सावधान रहो

प्रश्नकर्ता : यह 'ज्ञान' लेने के बाद आपने व्यवहार को निकाली कहा है, वह बात ठीक है लेकिन उसमें कहीं कोई अनौपचारिक व्यवहार होता है तो वहाँ पर 'चार्जिंग' का भयस्थान कहाँ है?

दादाश्री : 'चार्ज' हो जाए वैसे भयस्थान हैं ही नहीं लेकिन जहाँ शंका होने लगे, वहाँ पर 'चार्ज' हो जाएगा। शंका होने लगे तो उस भयस्थान को 'चार्जिंग' वाला मानना। शंका अर्थात्, कैसी शंका? नींद नहीं आए, ऐसी शंका। यों ही छोटी सी शंका हुई और बंद हो जाए, ऐसी नहीं। क्योंकि जो शंका हुई, बाद में फिर उसे भूल जाएँ तो उस शंका की कोई कीमत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर बिंदास रहना है? निडर और बेलगाम रहना है?

दादाश्री : नहीं। बेलगाम रहोगे तो मार पड़ेगी। बेलगाम हो जाए और बेफिक्र हो जाए तो मार पड़ जाती है। इन अंगारों में क्यों हाथ नहीं डालते?

प्रश्नकर्ता : तो फिर वहाँ पर कौन सा औपचारिक 'एक्शन' लेना चाहिए?

दादाश्री : 'एक्शन' में दूसरा क्या लोगे? वहाँ पर पछतावा और प्रतिक्रमण, इतना ही 'एक्शन' है।

प्रश्नकर्ता : यानी अपने इस 'ज्ञान' के बाद का पुरुषार्थ कौन सा है? पछतावा करना है या भाव मन पर छोड़ देना है?

दादाश्री : भाव मन तो इस 'ज्ञान' के बाद रहता ही नहीं है। लेकिन जिसका यह 'ज्ञान' कच्चा रह गया हो, उसमें शायद भीतर थोड़ा बहुत भाव मन रह जाता है। बाकी, भाव मन नहीं रहता। 'ज्ञान' कुछ कच्चा परिणमित हुआ हो, यह 'ज्ञान' पूरी तरह से सुना नहीं हो अथवा यह 'ज्ञान' पूरी तरह से बोला नहीं हो, तो उसके अंदर कच्चा पड़ जाता है। यह तो, कई बार नया 'इंजन' भी शुरू नहीं होता, ऐसा होता है न?

इसलिए सिर्फ पछतावा ही करना है और पछतावा भी आपको नहीं करना है। आपको अपने आपसे पछतावा करवाना है कि, 'आप पछतावा करो। आप ऐसे हो, वैसे हो'। ऐसा 'आपको' 'चंदूभाई' से कहना है। इस तरह 'आप' चाहे कितना भी डाँटोगे तो कोई शिकायत करेगा 'आपकी'?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस 'ज्ञान' के बाद तो 'चार्जिंग' होगा ही नहीं न?

दादाश्री : 'चार्जिंग' नहीं होता, लेकिन इस तरह शंका रखेंगे तो 'चार्जिंग' होगा। यदि मोक्ष चाहिए तो शंका नहीं करनी चाहिए। वर्ना फिर भी, अज्ञानता में तो वैसा होगा ही। जबकि यह तो 'ज्ञान' का लाभ मिल रहा है, मुक्ति का लाभ मिल रहा है और जो 'है' वही हो रहा है। इसलिए शंका रखने का कोई कारण नहीं है। शंका बिल्कुल छोड़ देना। 'दादा' ने शंका करने के लिए मना किया है।

प्रतिक्रमण से सुलझेगी शंका की उलझन

प्रश्नकर्ता : लेकिन कभी अगर प्रकृति में ही शंका की उलझन हो चुकी हों, तो उनका छेदन कैसे किया जा सकता है?

दादाश्री : 'दादा' क्या कहते हैं कि शंका रखना ही मत। शंका आए तो कहना, 'जा, दादा के पास'! ऐसा उदय आए, तब भी वह उदय और आप दोनों अलग ही हैं।

प्रश्नकर्ता : सामने वाले पर शंका नहीं करनी है फिर भी शंका हो जाती है, तो उसे कैसे दूर करें?

दादाश्री : वहाँ पर फिर उसके शुद्धात्मा को याद करके क्षमा माँग लेना, उसका प्रतिक्रमण करना। यह तो पहले की भूलें की हुई हैं, इसलिए शंका होती है।

प्रश्नकर्ता : अपने कर्म के उदय के कारण जो भोगना पड़ता है, प्रतिक्रमण करते रहने से वह कम होगा न?

दादाश्री : कम होगा। और 'आपको' नहीं भोगना पड़ता। 'आप' 'चंदूभाई' से कहना, 'प्रतिक्रमण करो'। तब फिर कम हो जाएगा। जितना-जितना प्रतिक्रमण करते जाएँगे उतना वह कम होगा न! फिर रास्ते पर आ जाएगा।

यह तो कर्म के उदय से सब मिले हैं। इसे अज्ञानी बदल नहीं सकते और ज्ञानी भी नहीं बदल सकते तो फिर क्यों हम दो नुकसान उठाएँ?

प्रश्नकर्ता : यह आपने ठीक कहा दादा, कि यह जगत् पहले से ऐसा ही है।

दादाश्री : इसमें अन्य कुछ है ही नहीं। यह तो ढँका हुआ है इसलिए ऐसा लगता है और शंका ही मारती है। अत: अगर शंका होने लगे तो होने ही मत देना और प्रतिक्रमण करना। किसी भी व्यक्ति के प्रति कोई भी शंका हो तो प्रतिक्रमण करना।

प्रश्नकर्ता : शंका के उपाय में प्रतिक्रमण कर लेना है? शंका हो कि तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना है?

दादाश्री : हाँ, जिसके लिए शंका हो उसके लिए प्रतिक्रमण करना है। प्रतिक्रमण करने बाकी नहीं रहे यानी आप पर किसी को शंका ही नहीं रहती, नि:शंक पद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी प्रतिक्रमण यही उपाय है न, इसका?

दादाश्री : हाँ, यही उपाय है। वर्ना शंका तो आपको खा जाएगी।

ऐसे प्रतिक्रमण यहाँ पर सीखे, इस प्रतिक्रमण ने बहुत काम कर दिया। इस प्रतिक्रमण के आधार पर तो आप जीवित हो। आपका तो इतना ही परिवार है। मेरा तो कितने ही सदस्यों का परिवार है। परंतु किसी पर शंका ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : कोई भी शंका हो तो उसका

समाधान कर लेना अच्छा है, तो शंका का *निकाल* (निपटारा) होगा।

दादाश्री : किसी भी चीज़ की शंका होती हो न, तो सब जाँच कर आना और आकर सो जाना। अंत में जाँच भी बंद कर देना है।

जानते हैं सबकुछ, फिर भी शंका नहीं

मैं क्या कह रहा हूँ कि शंका, वह तो भूत है। उस डायन को चिपटाना हो तो चिपटाना, आपको डायन पसंद हो तो चिपटाना लेकिन यदि शंका होने लगे तो उसे क्या कहना चाहिए? कि 'दादा के फॉलोअर बने हो और अब किस चीज़ की शंका रखते हो? दादा किसी पर शंका नहीं रखते, तो आप क्यों शंका रखते हो? वह बंद कर दो। दादा इस उम्र में शंका नहीं रखते हैं, फिर आप तो जवान हो', ऐसा कहेंगे तो शंका बंद हो जाएगी।

हमने ज़िंदगी में शंका ही निकाल दी है। हमें किसी पर भी शंका आती ही नहीं। वह 'सेफसाइड' है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बहुत बड़ी 'सेफसाइड'।

दादाश्री : शंका नाम तक (ज़रा सी भी) नहीं। जेब में से रुपये निकालते हुए देख लिया हो तो भी उस पर शंका नहीं और दूसरे भयंकर गुनाह किए हों तो भी शंका-वंका, राम तेरी माया! जानते ज़रूर हैं, जानकारी में होता है। हमारे ज्ञान में होता है कि 'दिस इज़ दिस, दिस इज़ देट', लेकिन शंका नहीं।

इसलिए हमारे जैसा रखना, शंका निकाल देना। चाहे किसी भी बाबत में हो, नज़रों से देखी हुई बात हो न, तब भी शंका नहीं। जान लेना है, जान ज़रूर लेना। जानने में पाप नहीं है और आँखों से देखा हुआ भी गलत निकलता है। मेरे साथ कितनी ही ऐसी घटनाएँ हुई हैं! इन आँखों से देखता हूँ, फिर भी गलत निकलता है। ऐसे उदाहरण 'एक्ज़ेक्ट' मेरे अनुभव में आए हैं। तो और कौन सी चीज़ को सही मानें हम? अत: देखने के बाद भी शंका नहीं करनी चाहिए। हमारी यह खोज बहुत गहरी है। यह तो जब बात निकलती है तब खुद के अनुभव में पता चलता है और दुनिया के लोगों में से कहीं ये सारी शंकाएँ निकल नहीं चुकी हैं।

हमने कभी भी किसी पर शंका नहीं की है। हम बारीकी से जाँच करते हैं, लेकिन शंका नहीं रखते। जो शंका रखता है, वह मार खाता है। जानते ज़रूर हैं, लेकिन शंका नहीं रखते। ज़रा सी भी शंका नहीं रखते! एक ज़रा सी भी शंका, किसी पर मुझे नहीं हुई है। जानते सबकुछ है, एक अक्षर भी हमारी जानकारी से बाहर नहीं होता। यह इतने पानी में है, यह इतने पानी में, कोई इतने पानी में है, कोई इतने पानी में है, सबकुछ जानते हैं। किसी ने नीचे से पैर ऊँचे किए हैं, कोई मुँह बिगाड़ रहा है। अंदर पैर ऊपर किए हैं, वह भी दिखाई देता है मुझे। लेकिन शंका नहीं करते हम। शंका से क्या फायदा होता है?

प्रश्नकर्ता : नुकसान होता है।

दादाश्री : क्या नुकसान होता है?

प्रश्नकर्ता : खुद को ही नुकसान होता है न!

दादाश्री : नहीं, लेकिन सुख कितना देती है? शंका हुई तब से जैसे भूत लिपटा। 'ये ही ले गया या इसी ने ऐसा किया।' उससे पैठी शंका! उसका भूत लग गया आपको। सामने वाले का तो जो होना होगा वह होगा, लेकिन आपको भूत

लग गया। ये 'दादा' इतने सतर्क हैं कि किसी पर ज़रा सी भी शंका नहीं करते। जानते सबकुछ हैं, लेकिन शंका नहीं करते।

अनंत जन्मों की पीड़ा में से छूटो

अनंत जन्मों से इसी पीड़ा में पड़ा है! ये तो इस जन्म के पत्नी-बच्चे हैं, लेकिन हर एक जन्म में हर कहीं बीवी-बच्चे ही रखे हैं! राग-द्वेष किए हैं और कर्म ही बाँधे! ये संबंध-वंबंध जैसा कुछ नहीं होता। ये तो कर्म फल देते रहते हैं। घड़ीभर में उजाला देते हैं और घड़ीभर में अंधेरा देते हैं। घड़ी में मारते हैं और घड़ी में फूल चढ़ाते हैं! इसमें संबंध तो होते होंगे?

यह तो अनादि से चल ही रहा है! हम इसे चलाने वाले कौन? हम अपने कर्मों में से कैसे छूटें, वही 'देखते' रहना है। बच्चों का और आपका कुछ लेना-देना नहीं है। यह तो बेकार की *उपाधि*! सभी लोग कर्मों के अधीन है। यदि सच्चे संबंध हों न, तो घर में सभी लोग तय कर लें कि हमें घर में झगड़ा नहीं करना है। लेकिन ये तो घंटे-दो घंटे बाद लड़ पड़ते हैं! क्योंकि किसी के हाथ में वह सत्ता है ही नहीं न! ये तो सब कर्म के उदय हैं। जैसे पटाखे फूटते हैं, वैसे पटापट-पटापट फूटते हैं। कोई सगा भी नहीं और स्नेही भी नहीं, तो फिर शंका-कुशंका करने को कहाँ रहा? 'आप' खुद 'शुद्धात्मा', यह 'आपका' 'पड़ोसी' शरीर ही आपको दुःख देता है न! और बच्चे तो 'आपके' 'पड़ोसी' के बच्चे! उनके साथ आपको क्या लेना-देना? और पड़ोसी के बच्चे नहीं मानें तो आप उनसे ज़रा कहने जाएँ तो बच्चे क्या कहते हैं कि, 'हम कैसे आपके बच्चे? हम तो शुद्धात्मा हैं'! किसी को किसी की पड़ी नहीं है!

प्रश्नकर्ता : यदि सार निकालें तो सभी हिसाब वसूलने आए हैं। और हिसाब चुका भी देते हैं, लेकिन उसमें 'समभाव से *निकाल*' होता है या नहीं, इतना ही हमें चाहिए।

दादाश्री : 'समभाव से *निकाल*' हो जाए तो कल्याण हो जाए।

प्रश्नकर्ता : आपने तो कृपा की जबकि हमने हमारा 'वक्रम' (खराब काम) किया , परंतु वे शुद्ध हो गए, यह हकीकत है।

दादाश्री : आप दादा के साथ इतने जुड़े रहे, वह बहुत हो गया। एक दिन इसका सार समझ में आ जाएगा कि सही था यह।

प्रश्नकर्ता : अरे, एक दिन होता होगा? आज से ही लें न, कल किसने देखा है? इसलिए ऐसी शक्ति दीजिए कि जो थोड़े-बहुत कर्म बाकी बचे हैं, उन्हें हम निपटा सकें और बुद्धि उल्टे रास्ते पर नहीं जाए।

दादाश्री : यहाँ आते रहो न, एक-एक घंटे जितना, तो उतना ही वह विलय होते-होते खत्म हो जाएगा।

जड़मूल से निकालो शंकाएँ

यह तो, जगत् तप रहा है। कैसा तप रहा है, कैसा तप रहा है! और शंका होने लगे तो कितनी घुटन होगी?

प्रश्नकर्ता : बहुत होगी।

दादाश्री : बहुत घुटन होती है या काटती है?

प्रश्नकर्ता : काटती भी है!

दादाश्री : देखना ऐसी कोई शंका मत करना। शंका किसी पर भी मत करना। शंका करने जैसा नहीं है यह जगत्। अंदर दूर तक का दिखता है तभी शंका होती है न! नहीं तो

यह शंका, अगर एक बार घुस जाए न, तो जब वह शंका निकल जाए तब काम का! अब वह यों ही नहीं निकल जाती। इनका सामर्थ्य ही नहीं कि शंका कैसे निकाले?! 'ज्ञानी पुरुष' सारी निकाल देते हैं, किसी और का सामर्थ्य नहीं है। कम बुद्धि वाला हो न, तो चलता है। शंका किसे होती है? बहुत तेज़ बुद्धि वाला हो न, उसे अधिक शंका होती है। मुझे तो चलते-फिरते शंका होती थी, जब तक ज्ञान नहीं हुआ था तब तक।

अत: जागृति नहीं हो तो कोई परेशानी नहीं है और जागृत के लिए तो बहुत परेशानी है न! जागृति हितकारी सिद्ध होती है या टेढ़ी सिद्ध होती है?

प्रश्नकर्ता : बहुत हितकारी होती है। लेकिन अगर शंका करवाए तो उसे निकाल ही देना है।

दादाश्री : जागृति निकाल देनी है या वह शंका निकाल देनी है?

प्रश्नकर्ता : शंका ही निकाल देनी है।

दादाश्री : हाँ, जागृति तो रहने देनी है न? हमने तो शंका की सब जड़ें निकाल दी हैं। आपने जड़मूल से खोदकर निकाल दी हैं या रहने दी हैं कुछ-कुछ?

प्रश्नकर्ता : अंदर शंका की बहुत खोज चलती रहती थी।

दादाश्री : लेकिन उसे जड़मूल से निकाल नहीं दिया अभी तक?

प्रश्नकर्ता : आज दादा की तरफ से निमित्त मिला है।

दादाश्री : हाँ, ऐसा कुछ होगा तभी न, वर्ना बात निकलती नहीं न। और मैं थोड़े ही किसी खास टाइम पर यह बात निकालता हूँ? 'एविडन्स' मिलते हैं, तभी निकलती है न! इनका कुछ समाधान होना होगा, उनका कुछ समाधान होना होगा, आपका कुछ थोड़ा-बहुत समाधान होना होगा, तभी निकली होगी न!

वर्ना शंका आए तो पूरी रात नींद नहीं आती।

प्रश्नकर्ता : अंदर कचोटती रहती है। इतनी मार खाई तब भी वापस नहीं जाती।

दादाश्री : क्या फायदा मिला?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं।

दादाश्री : इसके बावजूद भी रहती है! तो किसलिए यह बात निकली? मुझे पता नहीं था कि इतना सारा होगा! यह 'ज्ञान' दिया हुआ है इसलिए आप ऐसी छोटी-मोटी चीज़ें तो निकाल दोगे न, अपने आप ही निकाल दोगे। और जो चुभने वाली चीज़ चुभती है, आपको यों कंकड़ चुभें तो पता नहीं चलता, आपको 'ज्ञान' वाले को? चुभें तो निकाल देते हो या नहीं निकाल देते? उसे रहने देते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, निकाल देता हूँ।

दादाश्री : अब नहीं रहेगा न?

वीतरागता और निर्भयता से टले शंका

अपना तो यह आत्मज्ञान है! कोई ऐसी-वैसी चीज़ नहीं है! यह तो आपको ग़ज़ब की चीज़ प्राप्त हुई है! और ये जो सारे भाव आते हैं न, मन के भाव, बुद्धि के भाव, वे सभी भाव सिर्फ भयभीत ही करवाने वाले हैं। एकबार समझ जाना है कि ये सिर्फ भयभीत करने वाले लोग हैं और जब तक बुद्धि का उपयोग होता रहेगा, तब तक वह दखल करती ही रहेगी। आपकी बुद्धि दखल करती है क्या?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी खड़ी हो जाती है, उल्टी खड़ी हो जाती है।

दादाश्री : लेकिन वह गलत चीज़ है, उतना तो आप समझ गए हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उतना तो समझ में आता है।

दादाश्री : वह गलत चीज़ है और ये जो नखरें करती है, वे सभी गलत हैं, वह सब समझ में आ गया है न? वह सही चीज़ नहीं है, ऐसा समझ में आ गया है न? हाँ, यह सब समझ लें तो आत्मा की तरफ जाने के प्रयत्न होते ही हैं। फिर भी बुद्धि का बहुत ज़ोर हो तो हिल जाते हैं।

जब मुश्किलें आती हैं तब वापस संदेह खड़े हो जाते हैं। यह सब तो बदलेगा। हमेशा एक ही प्रकार का थोड़े ही रहता है? जैसे दिन-रात बदलते रहते हैं, टाइम निरंतर बदलता रहता है, वैसे ही ये अवस्थाएँ निरंतर बदलती रहेंगी!

मनुष्य का संदेह कब जाता है? वीतरागता और निर्भय होने के बाद संदेह जाता है। वर्ना संदेह तो जाता ही नहीं है। जब तक शांति रहे, तब तक अनुकूल लगता है लेकिन जब परेशानी आए तब अशांति हो जाती है न! तब वापस अंदर उलझन में पड़ जाता है, और उसी वजह से सारे संदेह खड़े होते हैं। हमें कहीं भी संदेह नहीं होता।

जहाँ शंका है, वहाँ दु:ख है। और 'मैं शुद्धात्मा,' कहते ही नि:शंक हो गया, उससे दु:ख चला जाएगा। अत: नि:शंक हो जाएगा तभी काम होगा। नि:शंक होना, वही मोक्ष है। बाद में फिर कभी भी शंका नहीं हो, उसी को मोक्ष कहते हैं। अत: यहाँ पर सभी कुछ पूछा जा सकता है। शंका निकालने के लिए ही तो ये 'ज्ञानी पुरुष' हैं। अंदर सभी प्रकार की शंकाएँ हों न, तब 'ज्ञानी पुरुष' हमें नि:शंक बना देते हैं। नि:शंकता से निर्भयता उत्पन्न होती है और निर्भयता से असंगता उत्पन्न होती है। असंगता ही मोक्ष कहलाता है। मोक्ष में जाने का ज्ञान मिला है इसलिए अब मोक्ष में जाने की सभी तैयारियाँ रखना।

मैं पूरी दुनिया से 'शंका' निकालना चाहता हूँ

प्रश्नकर्ता : आपके पास, अब अंत में ऐसा लगता है कि अब किसी भी जगह पर शंका नहीं रही और हम 'कन्विन्स' हो गए हैं।

दादाश्री : हाँ, यहाँ शंका रहती नहीं है न! और शंका रखने जैसा जगत् ही नहीं है। यदि शंका रखने जैसा जगत् होता न, तो मैं आपसे कहता ही नहीं कि 'अरे, मेरी गैरहाज़िरी में आप ऐसी-वैसी शंका मत करना'। मैंने आपसे अच्छे 'खाने, पीने' के लिए मना नहीं किया है। और ऐसा कहा है कि 'ऐसी शंका वगैरह मत करना,' क्योंकि नि:शंक जगत् मैंने देखा है, तभी मैं आपसे कह सकता हूँ न! मैंने नि:शंक जगत् देखा है, वह इस दिशा में नि:शंक है और दूसरी दिशा में शंका वाला है। तो यह नि:शंक दिशा बता देता हूँ, ताकि फिर झंझट ही नहीं न!

अब अगर शंका रखें ही नहीं तो चलेगा या फिर नहीं चलेगा?

प्रश्नकर्ता : वह तो अच्छा चलेगा न! लेकिन ऐसा होना चाहिए न!

दादाश्री : वह तो फिर हो जाएगा! यानी यह शंका शब्द तो मैं पूरी दुनिया से निकाल देना चाहता हूँ। यह शंका शब्द निकाल देने जैसा है। 'वर्ल्ड' में इसके जैसा कोई भूत नहीं है। और इसी वजह से काफी कुछ लोग दु:खी हैं, शंका से ही दु:खी हैं।

खुद के ज्ञान पर वहम करवाए, वे हैं 'ज्ञानी'

किसलिए वहम रखना है फिर? यह वहम तो रखने जैसा है ही नहीं, दुनिया में! वहम, वह नुकसानदायक 'प्रोब्लेम' है। जो है उससे अधिक नुकसान करेगा और जो नुकसान होना है तो उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। इसलिए वहम को छोड़ दो। मैं तो इतना ही कहता आया हूँ और काफी कुछ लोगों को छुड़वा दिया है!

यानी खुद के ही ज्ञान पर जो वहम (शंका) डाल दे, उसे 'ज्ञानी' कहते हैं! खुद का ज्ञान तो कभी भी झूठा हो ही नहीं सकता न? लेकिन 'ज्ञानी' वह सब कर सकते हैं, तो उसे खुद को वहम हो जाता है। वह 'रोंग बिलीफ' निकल गई तो काम हो गया!

अनुभवी ज्ञानी के पास सभी शंका का हल

'ज्ञानी पुरुष' ने ही खुद, अपनी शंका निकाली और दूसरों की भी सारी शंकाएँ निकाल देते हैं, वर्ना और कोई निकाल नहीं सकता। मनुष्य से खुद से शंका नहीं निकाली जा सकती।

जो व्यवहार में ही है, उसे तो व्यवहार का भान ही नहीं होता न! व्यवहार का आग्रह होता है, वह व्यवहार में ही रहता है। इसलिए व्यवहार का उसे पता ही नहीं होता है न! 'जो' व्यवहार से बाहर है, वह 'सेटल' कर सकता है! वर्ना तब तक व्यवहार में सेटल नहीं हो सकता।

'ज्ञानी पुरुष' व्यवहार से बाहर होते हैं। इसलिए उनकी वाणी ही ऐसी निकलती है कि अपना सबकुछ 'एक्ज़ेक्ट' हो जाता है। वर्ना शंका निकालने से नहीं जाती है, ज्ञानी पुरुष के कहने से शंका चली जाती है।

किसी भी जगह पर शंका नहीं करनी चाहिए। शंका जैसा दु:ख नहीं है इस दुनिया में। क्योंकि मैंने आपको आत्मा दिया है, नि:शंक आत्मा दिया है, कभी भी शंका उत्पन्न नहीं हो, ऐसा आत्मा दिया है। इसलिए 'ऐसा होगा या वैसा होगा' ऐसी झंझट ही मिट गई न! यह तो 'अक्रम विज्ञान' है इसलिए सीधे शुद्ध आत्मा ही प्राप्त हो जाता है।

शंका के सामने आत्मा खड़ा नहीं रहता। ज्ञान तो वह है, कि जो संपूर्ण नि:शंक बनाए। क्षणभर के लिए भी शंका न हो, उसे कहेंगे आत्मा। आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं! जब तक आत्मा से संबंधित शंका नहीं जाती, तब तक संसार की कोई भी शंका नहीं जाती। यह 'पज़ल' (पहेली) 'सॉल्व' (हल) नहीं हो सकता। यह 'पज़ल' तो भारी है! इतने बड़े जगत् को नि:शंक रूप से जानो। किसी भी जगह पर शंका पड़नी ही नहीं चाहिए। 'ज्ञानी' अर्थात् क्या? जिन्होंने पूरे जगत् को नि:शंक रूप से जाना है। उनके पीछे-पीछे चलकर आप भी उसी प्रकार जानोगे तो आपका हल आ जाएगा।

अब यह सारा मेरा अनुभवसहित ज्ञान है। ये तो मेरे ही अनुभव रखे हैं सभी, और वे भी 'अप्रोपिएट' (उपयुक्त)! ये मेरी हर क्षण की जागृति के अनुभव दिए हैं और यह सिर्फ अभी की लाइफ का नहीं है, लेकिन अनंत जन्मों की लाइफ का है! और वह भी फिर मौलिक है। शास्त्रों में न मिले, तब भी हर्ज नहीं, लेकिन मौलिक है! यानी कि काम निकाल लेने जैसा है अभी। इसलिए हम कहते हैं न, कि काम निकाल लो, काम निकाल लो, काम निकाल लो! यह कहने का भावार्थ इतना ही है कि ऐसा किसी काल में मिलता नहीं है और मिला है तो पूरी समर्पणता से काम निकाल लो!

जय सच्चिदानंद

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
आगरा	(2 जुलाई)	दोपहर 2 से 5-30	यूथ हॉस्टल, संजय पेलेस, आगरा.	9219732860
अहमदनगर	(3 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	दर्शन छाया अपार्टमेन्ट, कुष्ठधाम रोड़, सावेदी, अहमदनगर.	9422225475
अजमेर	(2 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	श्री राम धर्मशाला, जवाहर रंग मंच के पीछे, अजमेर.	9460611890
अकोला			अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	9511211451
प्रयागराज	(2 जुलाई)	दोपहर 2-30 से 6	10/333 आवास विकास कॉलोनी, योजना-3, झूंसी प्रयागराज.	9935378914
अमरावती	(2 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	रूद्रेश मंगलम्, नंदा मोटर्स के सामने, नवाथे चौक के पास, बड़नेरा रोड़, अमरावती.	9422335982
अंजड़			अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	9617153253
आसनसोल	(7 जुलाई)	सुबह 10 से 5	नंदी जमुरिया सिटी, आसनसोल, WB.	7679186469
औरंगाबाद	(3 जुलाई)	शाम 5 से 8-30	निमिषा बँगला, पेंडकर हॉस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक, सेंट्रल बस स्टैंड रोड, औरंगाबाद.	8308008897
बेंगलुरु	(2 जुलाई)	सुबह 11 से 4-30	महाराष्ट्र मंडल, दूसरा क्रॉस, गांधी नगर, बेंगलुरु.	9590979099
बाड़मेर	(3 जुलाई)	दोपहर 1 से 5	धारीवाल भनव, जैन नोहरे की गली, ढाणी बाजार, बाड़मेर.	9314209457
भिलाई	(3 जुलाई)	शाम 4-30 से 8	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मैत्री गार्डन रोड, पानी टंकी के पास, मरोदा, भिलाई.	9407982704
भोपाल	(1 जुलाई)	शाम 4-30 से 8	जनक विहार कॉम्प्लेक्स, 3rd फ्लोर, मेडिस्केन सेंटर, मालवीया नगर, भोपाल.	9826926444
भुवनेश्वर/(कटक)			अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	7077902158
बिलासपुर	(3 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	B-39, पारस प्रभा, गुप्ता गली, मन्नू चौक, बिलासपुर.	9425530470
चंडीगढ़	(2 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A, चंडीगढ़.	9780732237
चेन्नई	(3 जुलाई)	दोपहर 2 से 5-30	3 B, विश्रंती अपार्टमेंट, 3rd फ्लोर, 7-ब्रेथवेट रोड, वेपेरी, चेन्नई.	7200740000
देहरादून	(9 जुलाई)	दोपहर 2 से 6-30	1, अंतरिप विहार, C-12, भारतीय स्टेट बैंक के पास, क्लेमेंट टाउन, टर्नर रोड, देहरादून.	9012279556
दिल्ली (फरीदाबाद/गाज़ियाबाद/गुरुग्राम)	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 6	शाह ओडिटोरीयम, गुजराती समाज मार्ग, सिविल लाईन्स, दिल्ली.	9310366956
गढ़वा	(3 जुलाई)	शाम 5 से 8-30	बेलचाम्पा गाँव, गढ़वा, झारखंड.	9801362466
गोरखपुर	(3 जुलाई)	सुबह 11-30 से 3-30	95 A, बजरंग नगर कोलोनी के सामने, रामनगर रोड़, गोरखनाथ, गोरखपुर.	9935949099
गुवाहाटी	(3 जुलाई)	सुबह 11 से 4	सत्संग सेंटर, श्री नगर, गुवाहाटी, असम.	8638030026
ग्वालियर	(2 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	K.S मेमोरियल हाई स्कूल, गायत्री विहार कोलोनी, पिन्टु पार्क.	9926265406
हिसार	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	श्री बुधला संत हनुमान मंदिर, सेक्टर-14, गेट नं-2, हिसार.	9896871690
हुबली/(बेलगाँव)	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 4	श्री पाटीदार समाज, उन्कल टिम्बर यार्ड, हुबली.	9513216111
हैदराबाद	(3 जुलाई)	शाम 5-30 से 9	कच्छी भवन, इडन गार्डन रोड, रामकोटी.	9849167229
इन्दौर	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 4	CMP गुजराती प्राथमिक शाला, नसिया रोड़.	9893545351
जबलपुर	(3 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	यूथ हॉस्टल, रानीताल स्टेडियम के पास, रानीताल चोक.	9425160428
जयपुर	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 5	पर्वतीय समाज भवन, विशाल मेगा मार्ट के पीछे, गोपालपुरा बायपास.	8890357990
जलंधर	(3 जुलाई)	सुबह 9 से 12-30	C/O ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, पुरानी रेल्वे रोड़, जलंधर.	9216042571
जलगाँव	(2 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	व्हाइट हाउस, गणपति नगर, रोटरी होल के पास, जलगाँव.	9420942944
जमशेदपुर	(5 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	5/B, ज्योति अपार्टमेंट, 5th फ्लोर, रोड-2, कोंट्राक्टर एरिया, होटल सोनेट सामने, बिस्तीपुर.	9931538777

झाँसी	(2 जुलाई)	दोपहर 3 से 6-30	घर नं-1876, एस्टिलो 5 गेलेक्सी होल, खाती बाबा रोड़.	9415588788
जोधपुर	(2 जुलाई)	दोपहर 3 से 6-30	नागरिक मण्डल भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर.	9828360301
कानपुर	(2 जुलाई)	दोपहर 12 से 5	124/172, C ब्लॉक, गोविन्द नगर, कानपुर.	9452525981
काशीपुर	(3 जुलाई)	सुबह 9 से 1	जगदम्बा विहार कॉलोनी, ड्रोन सागर रोड, काशीपुर, उधमसिंह नगर.	9457635398
कोल्हापूर	(3 जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	2nd फ्लोर, श्री राधाकृष्ण मंदिर, तीसरी लेन, शाहुपूरी, कोल्हापूर.	7499898426
कोलकाता	(9 जुलाई)	सुबह 9-30 से 7	लक्ष्मी नारायण मंदिर, लेंसडाउन रोड, कोलकाता.	9830080820
लखनऊ	(2 जुलाई)	दोपहर 2 से 5-30	नंदना, बख्शी का तालाब.	9839265016
मुंबई	(3 जुलाई)	शाम 4 से 8-30	मुंबई त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनव नगर रोड, काजुपाड़ा, बोरीवली-ई.	9323528901
मैनपुरी	(3 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	रामदेवी कॉलोनी, राधा रमण रोड, मैनपुरी.	9410632963
नागपुर	(3 जुलाई)	सुबह 9-30 से 1-30	कच्छी व्हिसा ओसवाल भवन, लकड़गंज, नागपुर.	9325412107
नाशिक	(2 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी.	9823243766
पाली	(3 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	मेवाड़ा समाज भवन, रजत विहार कॉलोनी, नया गाव रोड़, पाली.	9252065202
पटना	(9 जुलाई)	सुबह 10 से 7	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड़, पटना.	7352723132
फोंडा(गोवा)	(9 जुलाई)	दोपहर 3 से 6-30	होटल यशोदा डिलक्स, फोंडा, गोवा.	8698745655
पूणे	(2 जुलाई)	सुबह 9-30 से 6	महावीर प्रतिष्ठान स्कूल, सेलिसबरी पार्क रोड़, गुलटेकड़ी, पूणे.	7875740566
पूर्णिया	(3 जुलाई)	सुबह 11 से 3	बार सोनी, निर्मल पेट्रोल पंप के पास, गुलाब बाग, पूर्णिया, बिहार.	7488744604
रायपुर	(2 जुलाई)	सुबह 10 से 5	दादा भगवान सत्संग सेंटर, गुजराती लोहार समाज भवन, गोंदवारा, रायपुर.	9179025061
सांगली	(9 जुलाई)	दोपहर 2 से 5-30	23, श्री शक्ति, एकता कॉलोनी, मार्केट कमिटी हाउसींग सोसाइटी, न्यू रेल्वे स्टेशन के पास, सांगली.	9423870798
सातारा	(1 जुलाई)	सुबह 10 से 5	929, आदर्श अपार्टमेंट, भावे सुपारी के पास, शनिवार पेठ, सातारा.	7722051313
सोलापुर	(2 जुलाई)	दोपहर 12 से 6	ऐशानी बंगलो, वसंत विहार निखिल थोबडे नगर, साईं सुपर मार्केट के पीछे.	9284188494
उदयपुर	(2 जुलाई)	दोपहर 2-30 से 6	1462, छोटी नोखा, कुम्हारोका भट्टा के अन्दर, वार्ड नं 39, उदयपुर.	9414538411
उज्जैन			अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें.	9009796972
वाराणसी	(8 जुलाई)	सुबह 11 से 4	श्री श्रृंगेरी शंकराचार्य मठ महमूरगंज, वाराणसी.	9795228541

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और 11-30 से 12 शनि-रवि (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर सोमवार से गुरुवार शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)

Atmagnani Pujya Deepakbhai's USA - Canada Schedule - 2023

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
21-Jun	Wed	7:00 PM	8:30 PM	**Satsang**	**(Montreal, Canada)** Olympia Reception Halls, 3855 Boul. Sainte-Jean A, Dollard-des-Ormeaux, QC H9G 1X2
22-Jun	Thu	10:00 AM	11:30 AM	**Aptaputra Satsang**	
22-Jun	Thu	5:30 PM	8:30 PM	**Gnanvidhi**	
24-Jun	Sat	5.00 PM	7.30 PM	**Satsang**	**(Toronto, Canada)** Renaissance by the Creek, 3045 Southcreek Rd, Mississauga, ON L4X 2X7
25-Jun	Sun	10.30 AM	12.00 PM	**Aptaputra Satsang**	
25-Jun	Sun	5:30 PM	8:30 PM	**Gnanvidhi**	
28-Jun	Wed	5:30 PM	8:00 PM	**Satsang**	**(Tampa, FL)** India Cultural Center, 5511 Lynn Road, Tampa, FL 33624
29-Jun	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
29-Jun	Thu	5:00 PM	8:00 PM	**Gnanvidhi**	
1-Jul	Sat	5:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(Guru Purnima - Dallas, TX)** Hilton Anatole, 2201 N Stemmons Fwy, Dallas, TX 75207
2-Jul	Sun	10:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
2-Jul	Sun	4:00 PM	7:00 PM	**Gnanvidhi**	
3-Jul	Mon	8:00 AM	9:30 AM	**Pujan, Aarti, Message**	
3-Jul	Mon	10:00 AM	12:30 PM	**Gurupurnima Darshan**	
3-Jul	Mon	4:30 PM	7:00 PM	**Gurupurnima Darshan**	
4-Jul	Tue	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
4-Jul	Tue	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
5-Jul	Wed	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
5-Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
6-Jul	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Satsang**	
8-Jul	Sun	4:00 PM	7:00 PM	**English Gnanvidhi**	DoubleTree by Hilton - **Dallas** - Richardson; 1981 N Central Expy, Richardson, TX 75080
12-Jul	Wed	10:30 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	**(Houston, TX)** Gujarati Samaj Hall, Houston, 9550 W Bellfort Ave, Houston, TX 77031
12-Jul	Wed	5:30 PM	8:00 PM	**Satsang**	
13-Jul	Thu	6:00 PM	8:00 PM	**Satsang**	
15-Jul	Sat	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	**(Chicago, IL)** Haridham Chicago Temple, 540 Martingale Road, Schaumburg, IL 60193
15-Jul	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**Gnanvidhi**	
16-Jul	Sun	5:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
17-Jul	Mon	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	
20-Jul	Thu	7:30 PM	10:00 PM	**Satsang**	**(San Jose, CA)** Shubham, 1214 Apollo Way, Suite 404B, Sunnyvale, CA 94085
21-Jul	Fri	7:30 PM	10:00 PM	**Satsang**	
22-Jul	Sat	10:00 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
22-Jul	Sat	5:00 PM	8:00 PM	**Gnanvidhi**	

Adalaj : PMHT Shibir: Dt. 3 to 7 May 2023

Adalaj : Pujya Deepakbhai's 71st Birthday Celebration : Dt. 9 May 2023

Darshan

Offering of Sukhadi Prasad

Darshan

Pujyashree Taking Blessings From Mahatmas

Cake Cutting

Mahatmas Engrossed In Bhakti

Performers on Stage With Pujyashree

Cultural Presentation

Illuminated Hall During Spiritual Concert

June 2023
Year - 18 Issue - 9
Continuous Issue - 212

Dadavani

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJENG/2006/17257

Suspicion 'Kills' a Person While He Is Alive

The entire world certainly has suspicion in matters of the Self. That is as per the law. The entire world is suspicious in matters of the Self and they think that they aren't going to die. But the one who has suspicions in his worldly interactions is 'dead' for sure. He will not trust anyone; he will continue to have suspicions. He wants to lend money, but he keeps having suspicions about the person borrowing the money; so, such a person is 'dead' for sure. When a girl goes to college, her father will have suspicions that, 'Now that she has grown up, what must she be doing? Who is she making friends with?' He will continue to have such suspicions. He is certainly 'dead', isn't he! Suspicion is of no use whatsoever. When one goes out with a knife to attack someone, he does not have any suspicion [about his actions] and that is why he goes and attacks someone! And the victim who is about to die does not suspect anything, so he ends up getting murdered. But he dies only once, whereas a person with suspicion is permanently 'dead'.

- Dadashri